चारप्रकरण, त्रणभाष्य, छ कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद

सर्वोदय ग्रंथावली ६५२

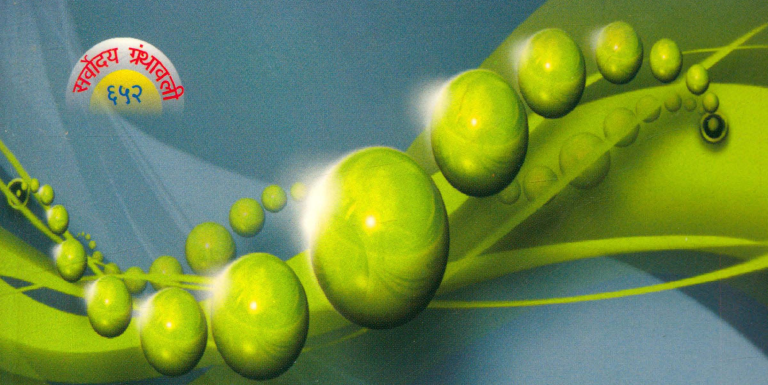

संयोजक

प.पू. श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म. सा.

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टनी विविध प्रवृतिओनी झलक

- श्री गृहमंदिरनी योजना
- श्री जिन प्रतिमाजीनी अष्ट मंगल पाटली योजना
- श्री गुरुमूर्तिओनुं निर्माण
- श्री ताम्रयंत्रोनी संकलना
- श्री आगम साहित्य
- श्री अर्वाचीन साहित्य
- श्री प्राचीन साहित्यनुं पांच-छ भाषामां संकलन
- श्री मल्टीकलर साहित्य
- पू. आ. श्री गुणसागरसूरि ज्ञानसंस्कार शिबिरनुं आयोजन
- गुरुगुण गीत गंगा केसेटोनुं आयोजन

पुस्तक प्राप्ति स्थान

विराग-तेजस-ऋजु गंगर
रमेश अपार्टमेन्ट, अहिल्या बाग सामे, थाणा

श्री सोमचंद भाणजी लालका
मुंबई गली, पो.-अमलनेर,
जि.-जलगाम, महाराष्ट्र-४२५४०१

मनोज जैन
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर, ३८२००७

सामायिक स्वाध्याय - गुणश्रेणी - ५३

चारप्रकरण, त्रणभाष्य अने छ कर्मग्रंथनो पद्यानुवाद

चार प्रकरण पद्यानुवादना रचयिता
कच्छ हालार देशोद्धारक - अचलगच्छेश प. पू. आ. भ. श्री
गौतमसागरसूरीश्वरजी म. सा. ना प्रतापी पट्टधर कलिकाल
कल्पतरु जंगमयुगप्रधान अचलगच्छाधिपति प. पू. आ. भ. श्री
गुणसागरसूरीश्वरजी महाराजा

त्रणभाष्य, छ कर्मग्रंथ पद्यानुवादना रचयिता
पूज्य श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म.सा.

प्रकाशक

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्ट

सौजन्य :- श्री जैन श्वे. मू. पू. संघ ज्ञानखाता - सेंधवा (म.प्र.)

वीर सं. २५३५, वि. सं. २०६५, आर्य संवत ८२९, गुणसंवत - २१

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

।।श्री महावीराय नमः।।। श्री सर्वोदय पार्श्वनाथाय नमः।।। श्री गौतमस्वामिने नमः।।

अचलगच्छेश जंगमयुगप्रधान आ. श्री आर्यरक्षित जयसिंह महेन्द्रप्रभ मेरुतुंग धर्ममूर्ति कल्याण गौतम गुणसागरसूरिभ्यो नमः।।

दिव्य कृपा

कलिकाल कल्पतरु जंगमयुगप्रधान अचलगच्छेश प.पू. आ.भ.श्री गौतम - नीति - गुणसागरसूरीश्वरजी म. सा.

शुभ आशीर्वाद

अचलगच्छाधिपति प.पू. आ.भ.श्री गुणोदयसागरसूरीश्वरजी म. सा.

प.पू. युवाचार्य श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा.

पू. गणिवर्यो, पू. मुनिवर्यो आदि

प्रेरणादाता

प.पू. तपस्वी मुनिराज श्री चारित्ररत्नसागरजी म.सा.

संकलनकर्ता

प.पू. श्रुतोपासक मुनिराज श्री सर्वोदयसागरजी म.सा.

मार्गदर्शक

प.पू. मुनिराज श्री उदयरत्नसागरजी म.सा.

संपादक

मनोज आर. जैन - कोबा

मूल्य २५ रु. ।। उदयो भवतु सर्वेषाम्।। वि. सं. २०६५, प्रथमावृत्ति

प्रास्ताविकम्

अनादिकाळथी आ जगतमां अनेक धर्म-दर्शनो प्रचलित छे तेमां जैनदर्शन पण एक छे. जैनदर्शननी अनेक वातो विश्वमां जेम अजोड छे तेम एनुं तत्त्वज्ञान पण अनेक दृष्टिए अनोखुं ज छे. जेमके बीजा बधा दर्शनो कोई एक दृष्टिकोणने प्रस्तुत करी तेनुं प्रतिपादन करीने अन्य धर्म-दर्शनोनुं खंडन करे छे ते प्रसिद्ध वात छे. परन्तु जैन दर्शन बीजा बधा धर्म-दर्शनोने पोतानी अनेकान्त दृष्टिनी आगवी रीतथी विश्लेषित करीने के समन्वय करीने तेनी साची वातने समर्थन आपे छे. ते पण कोईपण जातना राग-द्वेष विना. आ हकीकत विश्वना कोईपण प्राज्ञ-पुरुषने आकर्षित कर्या वगर रहेती नथी.

जैनदर्शनने समजवा माटे तेना पायानुं तत्त्वज्ञान लेवुं आवश्यक बने छे. आर्हतदर्शन, स्याद्वाद सिद्धान्त, अनेकान्त दर्शन वगेरे एना अनेक नामो छे. राग-द्वेष रहित सर्वज्ञ केवली तीर्थंकरो आ दर्शनना प्रणेता छे. पदार्थ विज्ञाननी दृष्टिथी, धार्मिक दृष्टिथी, विकासवादनी दृष्टिथी, प्राकृतिक स्वरूपनी दृष्टिथी, मूळपदार्थोनी

दृष्टिथी, व्यवहार अने निश्चय दृष्टिथी इत्यादि अनेक दृष्टिओथी संपूर्ण जगतनुं विगतवार निरुपण करे छे.

प्रस्तुत प्रकाशनमां जीवविचारादि चार प्रकरण, देववंदनादि त्रणभाष्य अने कर्मविपाकादि छ कर्मग्रंथो रूपी तत्त्वज्ञानो थाळ पिरसायेल छे. तेमां जीवविचार सौथी प्रथम छे. एटले मनुष्ये तेनुं स्वरूप बराबर जाणवुं जोईए. जीवनुं लक्षण शुं छे? तेना केटला भेदो छे? केवा शरीरवाळा होय छे? केटला आयुष्यवाळा होय छे? तेमने केटला प्राण होय छे? जीवोनी योनिओ केटली छे? विगेरे विगेरे प्रश्नो जिज्ञासुओना मनमां उठे ते स्वाभाविक छे. प्राथमिक कक्षाए आ ज्ञान आपणने जीव-विचार प्रकरण नामनी रचनामां अतीव सुंदरपणे मळे छे. आ प्रकरणना रचयिता श्री शांतिसूरिजी छे जेओ थारापद्र गच्छीय हता तेवो विद्वानोनो अभिप्राय छे.

बीजु प्रकरण नवतत्त्व छे. तद्दन सादा अने आबाळ-गोपाळने सुपरिचित शब्दोथी आखा जगतनुं नवतत्त्वोमां एकीकरण करायेल छे. आ जगतमां जीव अने अजीव एम बे प्रकारना तत्त्वो मुख्यरूपे

छे. आश्रव अने बंध ए जीवाजीव संयोगनुं अर्थात् जड-चेतनना संयोगनुं अवस्थान्तर छे. संवर अने निर्जरा ए आत्मानी उज्ज्वळ दशा छे. मोक्ष ए आत्मानुं शुद्ध स्वरूप छे. आ रीते जोता आश्रवादि पांचेय तत्त्वोनो समावेश जीव अने अजीवमां थई जाय छे. पुण्य अने पाप आत्मा साथे संबंध राखनारा कर्मपुद्‌गलो छे, जेथी पुण्य-पापनो बंधमां अंतर्भाव करीए तो सात तत्त्वो थाय. जेम नवतत्त्वनी परंपरा छे तेम सात तत्त्वोनी पण प्ररुपणा छे. आश्रव अने बंध संसारना कारण अने संवर तथा निर्जरा मोक्षना कारण छे. मुमुक्षुओने आत्मविकासमां आगळ वधवा माटे आ तत्त्वोनुं ज्ञान अत्यंत उपयोगी छे.

जैनदर्शननी खास विशिष्टता छे के चैतन्यवाळा जीवता पदार्थोनो समावेश जीवतत्त्वमां कर्यो छे अने जड चीजोनो समावेश अजीवतत्त्वमां करीने मोक्ष ए जीवननुं अंतिम साध्य तत्त्व बताव्युं छे. जीव सिवायना तत्त्वो जड-चेतनना संजोग-वियोगो उपर आधार राखनारा छे.

पाप-पुण्य कर्मोनो अने आत्मानो संबंध ते बंध छे के जे मोक्षमां बाधक छे. पाप-पुण्यना बंधनुं कारण आस्त्रव तत्त्व छे अने

तेओना बंधने रोकनार ते संवरतत्त्व छे बंध अने आस्त्रवनुं विरोधी तत्त्व निर्जरा छे. जे पुण्य अने पापथी आत्माने छूटो करवामां मदद करे छे. कर्मोथी अंशे छूटा पडवुं ते निर्जरा अने तद्दन छूटा पडवुं ते मोक्षतत्त्व. आम सादी रीते नवतत्त्वोनी व्यवस्था बतावीने तेना विस्तारमां आखा जगतनुं संपूर्ण विवेचन केवी रीते करे छे ते आ नवतत्त्व प्रकरणना अभ्यास थकी बराबर समजाशे.

आ नवतत्त्वो ज जगतना सत्य तत्त्वो अने जीवनना उत्कर्ष माटे खरेखरा मार्गदर्शक तरीके छे. आ प्रकरणना कर्ता अज्ञात जैनाचार्य मनाय छे. तथा नवतत्त्व संबंधी अनेक प्राचीन अर्वाचीन महर्षिओना रचायेला प्रकरणो पण उपलब्ध थाय छे.

त्रीजा क्रमे दंडक प्रकरण आपेल छे. तेना अभ्यासथी आपणने जीवमां रहेल गुणो, शक्तिओ, शरीरो, संघयण, संस्थानादि चोवीश प्रकारना पदार्थोनो बोध थाय छे. श्री भगवती आदि आगम ग्रंथोमां घणाबधा द्वारोथी आ विचारणा करवामां आवी छे. तेमां पदार्थोनुं विस्तारथी विवेचन छे. परंतु अल्पमतिवाळाने पण ते पदार्थज्ञान सरल रीते थाय ते माटे चोवीश दंडक पदोनी मर्यादा बाधीने आ प्रकरणमां तेनुं विवेचन करवामां आवेल छे.

ग्रंथकर्ताए बाळजीवोने सुग्राह्य बने ए रीते चोवीस दंडको द्वारा जीव विशे पदार्थोने घटाव्या छे. आ एक प्रकारनुं पद्धत्तिसरनुं पदार्थ विज्ञान छे. तेना अभ्यासथी ए विषयमां प्राथमिक कक्षावाळो जिज्ञासु तेमां सारी रीते अवगाहन करी शके छे.

आ प्रकरणना कर्ता श्री गजसारमुनि खरतरगच्छीय श्री जिनसिंहसूरिजीना शासनकाळमां थयेला धवलचंद्रमुनिना शिष्य हता. तेओए चोवीश दंडकना स्वरूपमां चोवीश जिनेश्वरोनी स्तुति-विज्ञप्ति रूपे आ प्रकरण रच्युं छे अने ते आत्महित कारक छे तेवुं तेओ प्रान्तमां जणावे छे.

चोथा क्रमे लघु संग्रहणी प्रकरण आवे छे. जेमां जैन दृष्टिए भूगोळनो विचार छे. धार्मिक अभ्यासना क्रममां आगळ वधवा जेम नवतत्त्वादिनुं ज्ञान उपकारक छे तेम खगोळ-भूगोळ विगेरे विश्वसंरचनाना विषयो पण अध्यात्म जीवनमां उपयोगी होवाथी तेनुं अध्ययन मनन करवुं जरूरी छे. आत्मकल्याणना परम साधनभूत जैन शास्त्रोना अभ्यास माटे पण आ विषयनुं ज्ञान लेवुं अत्यंत आवश्यक छे.

लघु संग्रहणीमां भूगोळना खंड, योजनादि दश प्रकारना साश्वत पदार्थोनुं संक्षेपमां वर्णन छे. तेनुं विस्तारथी वर्णन जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति आदि आगम ग्रंथोमां तेमज बृहत्संग्रहणी, क्षेत्रसमासादि मोटा ग्रंथोमां करेलु छे. ते ग्रंथोना अभ्यासमां पण आ प्रकरणनुं ज्ञान प्राथमिककक्षाए जरूरी छे.

पोते जे क्षेत्रमां हयात छे ते अने तेनी आसपासमां शुं छे तेनुं ज्ञान होवुं ए पण आत्मविकासना साधनोमांनुं एक आवश्यक अंग छे. आ प्रकरणमां उपरोक्त पदार्थोनुं टूंकमां सारभूत वर्णन करेलुं छे. संपूर्ण विश्वसंरचनाने मापवानी आपणी शक्ति नथी छतां सर्वज्ञ परमात्माना वचनो रूप आवा प्रकरणो द्वारा समजवामां आवे तो ते सरळ बने छे.

लघुसंग्रहणी प्रकरणना रचयिता आचार्य श्री हरिभद्रसूरिजी छे. तेओ कया गच्छना अने क्यारे थई गया ते विशे जाणवानुं साधन हजु सुधी उपलब्ध थयुं नथी छतां तेओ महान श्रुतधर हशे तेवी कल्पना करी शकाय.

जिनशासनमां देवतत्त्व, गुरुतत्त्व अने धर्मतत्त्व आ त्रणे

तत्त्वो प्रसिद्ध छे. आ तत्त्वोनी आराधना केवी रीते थाय, तेना विधि-विधान आवश्यकादि आगम ग्रंथोमां बतावाया छे. पण ते अतिविस्तारवाळा होई तेमांथी संक्षेपमां उद्धरीने आचार्य श्री देवेन्द्रसूरिजीए देववंदनभाष्य, गुरुवंदनभाष्य अने पच्चक्खाणभाष्य नामना त्रण स्वतंत्र प्रकरण ग्रंथोनी रचना करी छे. तेमां प्रथम देववंदनभाष्य देवतत्त्वनी आराधनाना मार्गदर्शनरूपे रचायेल छे.

देववंदनभाष्यनी व्याख्या करीए तो देव एटले भगवाननी मूर्ति तेना वंदन पूजननी विधि कहेनारुं शास्त्र एटले देववंदनभाष्य. आमां २४ प्रकारो वडे विधि दर्शावी छे. जिनमंदिरमां दर्शन-पूजन अर्थे जनारे कई कई बाबते ध्यान आपवुं केवो विधि साचववो जेथी तेनुं वास्तविक फळ प्राप्त थाय, ए बधुं आ भाष्यमां सुंदर प्रकारे दर्शाव्युं छे. शास्त्रोमां कह्युं छे के विधिपूर्वकनी भावक्रियाथी शुभ संस्कारोना बीज रोपाय छे. तेथी उत्तरोत्तर विशिष्ट पुण्यबंध द्वारा सद्गतिनी परंपरा बने छे अने जीव अन्ते परम पदनी प्राप्ति करे छे.

आ भाष्यमां ६३ गाथाओ, २४ द्वारो अने २०७४ बोलनुं वर्णन करीने आराधक जीवो माटे ज्ञाननो सुंदर रसथाळ पीरस्यो छे.

जे अभ्यासुओ माटे खूबज उपयोगी छे. जिनमंदिर संबंधित ३ निसिही, ३ प्रदक्षिणा, ५ अभिगमादि, ३ प्रकारना देववंदन, नमस्कार, अक्षर, पदादि तथा ४ निक्षेपे अरिहंतस्वरूप, ४ स्तुतिओ, १२ हेतुओ, १६ आगारो, १९ दोषो, १० मोटी आशातनाओ इत्यादि देववंदन विधि विषयक विशद वर्णन करायुं छे.

बीजु गुरुवंदनभाष्य छे. आमां गुरुने वंदन करवान्री विधि अने निषेधनुं सुंदर मार्गदर्शन करायेल छे. आ गुरुवंदनभाष्यना रचयिता आचार्य श्रीमान् देवेन्द्रसूरिजीए जणाव्युं छे के गुरुवंदननी विधिना अनभिज्ञ व्यक्ति द्वारा करायेल वंदन थकी ते जीव वास्तविक रीते उच्च निर्जरानो भागी थई शकतो नथी. अने जे विधि पुरस्सर वंदनादि क्रिया करे छे ते जीव अनेक भवोना उपार्जित अनंता कर्मोनो क्षय करे छे.

आपणे नित्यक्रम मुजब गुरुवंदन करीए छीए ते कया प्रकारनुं वंदन छे?, ते जो आपणे जाणता ज न होईए तो तेनो शो अर्थ छे?, वळी वंदनना केटला प्रकारो छे? इत्यादि गुरुवंदन संबंधित विधि निषेधनुं आराधकने सम्यग् ज्ञान होवुं अत्यन्त आवश्यक छे. आ भाष्य द्वारा आपणने गुरुवंदन विषयक खूबज

सचोट मार्गदर्शन प्राप्त थाय छे.

आ भाष्यमां कुल ४१ गाथाओ छे. अने २२ द्वारो वडे प्रतिपादन करायेल ४९२ प्रतिभेदोमां ३ प्रकारना वंदन, वंदनीय गुरुना अने वंदन करनारना प्रकारो, वंदननो अवसर, केटलीवार करवुं, केटला नमनवाळु करवुं, केटला शीर्षनमस्कारवाळुं करवुं, केटला आवश्यकोथी परिशुद्ध करवुं, केटला दोष टाळवा, पांच प्रकारना वंदन कोने करवा, केटलीवार करवा, शा माटे करवा इत्यादि तेमज वंदनना २२ द्वार, वंदननो निषेध, २५ आवश्यक, मुहपत्तिनी २५ प्रतिलेखना, शरीरनी २५ प्रतिलेखना, गुरुवंदनथी थतां गुण-लाभ, गुरुस्थापनानुं वर्णन इत्यादि अनेक विधिओनुं सुंदर प्रतिपादन करायेल छे.

त्रीजा प्रत्याख्यान नामना भाष्यमां नवकारसी आदि दश प्रकारना पच्चक्खाणनो विषय दर्शाव्यो छे. प्रत्याख्याननो अर्थ प्रतिज्ञा (नियम) एवो थाय छे. ते अनादिकाळथी जीवने वळगेली आहार संज्ञामांथी छोडावीने तपधर्ममां योजे छे.

आ भाष्यमां ४८ गाथाओ छे. तेना मूळ ९ द्वारोमां ९०

उत्तरभेदो वडे सवार अने सांजना प्रत्याख्यान करवानी विधिनुं सुंदर मार्गदर्शन करायेलुं छे. प्रसंगोपात चार प्रकारना आहार, २२ प्रकारना आगार (अपवाद), भक्ष्याभक्ष्य विगईओ, निवियाता अने पच्चक्खाणना अनेक प्रकारो इत्यादि स्वरूप दर्शाववामां आव्युं छे. आमां तपधर्मना स्थूळ अने सूक्ष्म भेदोनुं स्पष्ट प्रतिपादन करायेलुं छे.

वीतराग प्रभुना लोकोत्तर शासनमां तपोनुष्ठाननो महिमा आराधनामां अत्यन्त आवश्यक अने प्रभावनामां खूबज महत्वपूर्ण गणायो छे. हजारो वर्ष सुधी आहार ग्रहण नही करनारा देवोने जे लाभ नथी थतो ते लाभ एक नवकारसीना पच्चक्खाण करनारो साधारण जीव पामी जाय छे. आ सौभाग्य जेवुं तेवुं न गणाय.

आ भाष्यना कर्ता आचार्य श्री देवेन्द्रसूरिजी महाराज फरमावे छे के आ प्रत्याख्यानो स्वयं परमात्मा श्री जिनेश्वरदेवोए उपदेश्या छे अने भावपूर्वक आनी आराधना करनारा अनंता जीवो शाश्वत सुखना भोक्ता बन्या छे. जिनशासननी प्रत्येक आराधना पच्चक्खाणथी परिपुष्ट थयेली छे ते सहेजे जणाई आवे छे.

हवे कर्मसिद्धान्तनी वात करीए तो वैदिकादि घणाखरा धर्मदर्शनोमां कर्म विशे थोडा-घणा अंशे प्रतिपादन मळे छे पण सांगोपांग मार्गदर्शन जैनधर्म सिवाय कोई पासे नथी. कारण स्पष्ट छे तेना प्रणेता सर्वदर्शी सर्वज्ञ एवा तीर्थंकर भगवंतो. जीव अनादिकाळथी कर्मथी क्षीरनीरवत् लेपायेलो छे तेने परिशुद्ध करवानी प्रक्रिया कर्मविज्ञानमां उपदेशाई छे.

दरेक जीवात्मा मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने मन-वचन-कायाना योगो द्वारा सतत कर्मोपार्जन करतो रहे छे. उपार्जित कर्मो आत्मा साथे एकमेकभावे चोटी रहे छे. तेने दूर करवा माटेनी हेय-ज्ञेय-उपादेय प्रक्रियाने समजवा माटे केवली प्ररुपित कर्मसिद्धान्त आत्मसात् करवो अति आवश्यक बने छे.

वीतरागना एकान्तहितकारी वचनानुसार जीव तप-जप-आचरण नथी करतो त्यां सुधी ते चतुर्गतिरूप भवभ्रमणथी नथी अटकतो. ज्ञानीओनी दृष्टिए दयनीय दशाने पामेलो ते जीव अनेक प्रकारनी यातनाओ-दुःखो भोगवे छे. कर्मनी अने आत्माना शुद्ध स्वरूपनी ओळख कराववा पूर्वाचार्योए अपूर्वकोटिना अनेक

ग्रंथरत्नोनुं सर्जन करेल छे. ते पैकी आचार्य श्री देवेन्द्रसूरिजीए रचेल कर्मविपाक, कर्मस्तव, बंधस्वामित्व, षडशीति, अने शतक नामक पांच नव्य कर्मग्रंथोमां अने पूर्वाचार्य कृत सप्ततिका नामक छट्ठा कर्मग्रंथमां कर्मोनुं सुंदर विज्ञान प्रस्तुत करीने मुमुक्षुओने अतीव रोचक मार्गदर्शन पूरुं पाड्युं छे.

प्रथम कर्मविपाक नामक कर्मग्रंथमां कर्मोनुं स्वरूप, कर्मबंधना चार प्रकार, कर्मनी मूळ आठ प्रकृतिओ अने तेनी १५८ उत्तरप्रकृतिओना नामो, तेनुं स्वरूप, बंध उदय उदीरणा अने सत्तानुं स्वरूप तेमज कर्मबंधना हेतुओ इत्यादि विषयो रसप्रद रीते दर्शाव्या छे. आत्मार्थी भव्यजीवोने ते जाणवा खूब ज जरूरी छे.

कर्मस्तव नामक द्वितीय कर्मग्रंथमां प्रभु महावीरदेवे जे जे गुणठाणाओने विशे बंध, उदय, उदीरणा अने सत्ताना स्थानमां प्राप्त थयेला सघळा कर्मोने खपाव्या हता, तेनुं वर्णन गुणस्थानकनी श्रेणिए आपीने चौदगुणठाणाओमां कर्मस्वरूप वर्णववा द्वारा श्री महावीर प्रभुनी स्तुति करेल छे.

तेमा प्रथम चौद गुणठाणानुं स्वरूप, दरेक गुणस्थाने बंध, उदय, उदीरणा अने सत्ताए केटली केटली कर्मप्रकृतिओ होय छे तेनुं वर्णन करेल छे. तेमज कर्मप्रकृतिनी संख्या बतावनारा यंत्रो अने दरेक गुणस्थाने कई कई कर्मप्रकृतिओनो बंध, उदय, उदीरणा अने सत्ताए विच्छेद करे छे तेनुं स्वरूप दर्शावेल छे.

बंधस्वामित्व नामना त्रीजा नव्य कर्मग्रंथमां २५ गाथाओ छे. तेमां १२० प्रकृति मांहेथी केटली प्रकृतिना बंधनो स्वामी कयो कयो जीव छे तेनुं वर्णन करवामां आव्युं छे. गति विगेरे बासठ मार्गणास्थानकोने विषे संक्षेपथी जीवने बंधनुं स्वामीपणुं एटले पोताने योग्य दरेक गुणठाणे कयो जीव केटकेटली कर्मप्रकृति बांधे एनुं विवेचन करवामां आव्युं छे.

षडशीति नामना चतुर्थ कर्मग्रंथमां ८६ गाथाओ होवाथी तेनुं प्रचलित नाम षडशीति छे. ग्रंथकार आचार्य श्री देवेन्द्रसूरिए अंतमां तेनुं सूक्ष्मार्थविचार एवुं सार्थक नाम आपेलुं छे.

प्रथम कर्मग्रंथमां कर्मोना विपाक एटले फळनो विषय प्रतिपादित छे. कई कई कर्मप्रकृतिना उदय वखते शुं फळ मळे

ते जणावेल छे. बीजामां चौदगुणस्थानकने आश्रयीने ए कर्मप्रकृतिओना बंध उदय उदीरणा अने सत्तानो विस्तार बताव्यो छे. चौदगुणठाणाओ जीवात्मामां घटे छे अने ते बासठ मार्गणामां कोईने कोई मार्गणामां वर्ततो होय छे तेथी त्रीजा कर्मग्रंथमां बासठ मार्गणाने आश्रयीने बंधस्वामित्व दर्शाव्युं छे. ज्यारे चोथा कर्मग्रंथमां जीवस्थानक, मार्गणास्थानक अने गुणस्थानक आ त्रणे उपर कर्मोना बंध उदय उदीरणा अने सत्ताने विषे शास्त्रोमां जे सूक्ष्म विचार करवामां आव्यो छे तेनुं वर्णन करवामां आव्युं छे. माटे पूर्वापरना संबंधथी उत्तरोत्तर विषयो संकळायेला छे.

चौद जीवस्थानकने विषे गुणस्थानक, योग, उपयोग, लेश्या, बंध, उदय, उदीरणा अने सत्ताना स्थाननुं स्वरूप दर्शाव्युं छे. ज्यारे मार्गणास्थानने विषे जीवभेद, गुणस्थान, योग, उपयोग, लेश्या अने अल्पबहुत्वनुं स्वरूप बताव्युं छे. कर्मबंधना हेतुओनुं स्वरूप अने तेना भांगा अने संख्याता, असंख्याता आदि गणितनो विस्तार वर्णवेलो छे.

शतक नामना पांचमां कर्मग्रंथमां ध्रुवबंधी वगेरे प्रकृतिओनी

३३ संज्ञाओना ३३ द्वार वर्णव्या छे. प्रकृति, स्थिति रस अने प्रदेश ए चार प्रकारना कर्मबंधनुं विस्तृत वर्णन छे. चौद जीवस्थानकोना विशे अल्पबहुत्व, अग्यार गुणश्रेणीओनुं स्वरूप, गुणस्थान प्राप्तिनुं विवरण, पल्योपम, सागरोपम अने पुद्गल परावर्तनुं स्वरूप तथा तेना प्रकार, योगस्थानक वगेरेनुं अल्पबहुत्व, सूचिश्रेणि, उपशम अने क्षपकश्रेणि आदिनुं टूंक अने विस्तारपूर्वकनुं स्वरूप तेमज उपरोक्त विषयोना अवान्तर विषयोनुं सुंदर प्रतिपादन करेलुं छे.

सप्ततिका नामक छट्ठा कर्मग्रंथनी रचना प्राचीन महर्षिए करेल छे. तेमां मूल गाथाओ ७० होवाथी तेनुं सप्ततिका एवुं नाम रूढ थयेलुं छे. पछीथी तेमां दुर्बोधता लागवाथी अर्थना विस्तारार्थे बीजी २१ गाथाओ प्रक्षिप्त करीने कुल ९१ गाथाप्रमाण हालमां प्रसिद्ध छे.

आ कर्मग्रंथमां प्रारंभनी गाथामां दर्शावायुं छे के द्वादशांगीना बारमां दृष्टिवादनो अंशभूत आ ग्रंथ छे. केमके पंचप्रस्थानमय दृष्टिवादना अग्रायणी नामक बीजा पूर्वमां १४ वस्तुओ छे. तेमांनी पांचमी वस्तुमां २० प्राभृतो छे. ते पैकी चोथुं कर्मप्रकृति नामक

प्राभृत छे. तेना २४ अनुयोगोमां बंधोदयसत्ताना विषयनुं एक अनुयोगद्वार छे. तेनो आ सप्ततिका संक्षेप कहेवाय छे. एटले के संपूर्ण दृष्टिवादरूप महासागरना बिंदुरूप आ प्रकरण गणी शकाय. बंधस्थानक, उदयस्थानक अने सत्तास्थानक आ त्रणेनो समन्वय करवापूर्वक तेना विषयनुं प्रतिपादन करी तेमां विभागीकरण करवा स्वरूपे आ ग्रंथ रचायो होय तेम कही शकाय. उपरोक्त त्रणे स्थानोनो विस्तृत अर्थ कर्मप्रकृति नामना प्राभृतमां छे आ प्रकरण तेना अति संक्षेप रूपे छे.

प्रस्तुत प्रकाशनमां अमे अध्ययन मनन करनारा स्वाध्यायीओ माटे अचलगच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्रीगुणसागरसूरीश्वरजी महाराजा द्वारा हरिगीतछंदमां रचायेल चार प्रकरणोना क्रमशः गुर्जरभाषाबद्ध पद्यानुवादो आप्या छे.

पूज्य मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म. सा. ता. २१-१२-०५ थी ता. २३-०४-०६ सुधी श्री वीरचंद सोनी परिवारना तलासरीना N.. N.. सन्स पेट्रोलपंचना निवास स्थाने रह्या हता. पूज्यश्री साथे पूज्य मुनिराज श्री गुणवल्लभसागरजी म.सा. हता. चार

महिनानी स्थिरता दरम्यान पूज्य मुनिराज श्री गुणवल्लभसागरजीए १५०० गाथाओ कंठस्थ करी हती. ज्यारे पूज्य मुनिश्री सर्वोदयसागरजीए २० पद्यमय नूतन रचनाओ करी हती. तेमांथी त्रणभाष्य, छ कर्मग्रंथनी मळी नव पद्यरचनाओ आ प्रकाशन श्रेणीमां आपवामां आवी छे. तेमां प्रथम त्रणभाष्यो परना त्रण पद्यानुवादो क्रमशः आपी पछीना क्रममां छ कर्मग्रंथोना पद्यानुवादो आप्या छे. पूज्य साधु-साध्वीजी म. सा. अने मुमुक्षुओने चार प्रकरणनी मूळगाथाओ कंठस्थ कर्या पछी आ पद्यानुवादना अर्थो खूबज उपयोगी थई पडशे.

परम पूज्य श्रुतोपासक विद्वान् मुनिप्रवर श्री सर्वोदयसागरजी महाराजश्रीना सत्प्रयास अने प्रेरणाथी आ रीते जीवविचार आदि चार प्रकरणो, त्रणभाष्यो अने छ कर्मग्रंथोना पद्यानुवादो सर्वप्रथमवार छपाई रह्या छे जे ज्ञानपिपासुओ माटे आशीर्वाद रूप सिद्ध थशे. पूज्य मुनिराज श्री उदयरत्नसागरजी म. सा. ए आ कार्यमां सुंदर मार्गदर्शन करेल छे ते बदल तेओश्रीनो तथा दरेक पद्यानुवादने अक्षरशः चेक करी आपवा बदल पं. श्री चन्द्रकान्तभाई एस.

संघवीनो अने अतिव्यस्ततामांथी सहयोग आपवा बदल श्री मनोजभाई जैनना (कोबा) तेमज अन्य सहायक मित्रोनो अन्तःकरणपूर्वक आभार व्यक्त करीए छीए.

प्रकाशन संस्था श्री चारित्ररत्नफा.चे.ट्रस्टे प्रभु महावीरना २५३५मा निर्वाण महोत्सवना उपलक्षमां २५३५ ग्रंथो प्रकाशित करवानो महान संकल्प कर्यो छे. ए संदर्भमां ५०० जेटला ग्रंथो प्रकाशित थई चूक्या छे. तेनो अमने खूबज हर्ष छे. जेमां ५०० पूजन प्रतो पैकी २०० प्रतो प्रकाशित थई गई छे, ५०० अप्रगट ग्रंथो पैकी ५० ग्रंथो प्रेसमां छे, बीजा १३५ कथा ग्रंथो छ भाषामा अने ५ भाषामां प्रकाशित थया छे जे साधु-साध्वीजीओने भणवा माटे खूबज उपयोगी छे, ४५ आगम सचित्र गुजराती, हिंदी अने अंग्रेजी भावार्थ साथे प्रकाशित थयेल छे, ३०० रास वि. मर्यादित नकलो प्रकाशित करी छे, अचलगच्छनी १०० पूजाओ पैकी ५० प्रकाशित करी छे, १०० ढालिया, १५० अचलगच्छीय आर्चार्योना संस्कृत चरित्रो, १०८ करमशी खेतशी खोनानुं अप्रगट साहित्य, १५० श्री पार्श्वभाईनुं अप्रगट साहित्य, ५१ गुणमंजूषा प्रकाशित

थयेल छे. ५१ स्तोत्रो खंडान्वय-दंडान्वय अने पदच्छेद युक्त प्रकाशन थई रह्या छे जेमां २१ स्तोत्रो प्रेसमां छे. तदुपरांत १२० सामायिकमां स्वाध्याय पुस्तिकाओ अने २२५ विविध ग्रंथो आम कुल मळीने २५३५ ग्रंथो थाय छे. हमणासुधी आ कार्य धीमी गतिए चालतुं हतुं ते हवे देव-गुरु पसाये वेगवंतु चालशे एवी आशा छे.

ट्रस्टना निर्णयो

१. हवे पछी बधा ग्रंथो मल्टी कलरमां छपाशे.

२. ग्रंथो माटे दाननी अपील बहार पडशे नहि.

३. अध्ययनमां उपयोगी माहिती अलभ्य बने तो पोस्टल खर्च तथा झेरोक्ष खर्च लईने व्यवस्था करी आपवी.

४. प्रकाशित ग्रंथो कोईने पण भेटमां आपवा नहि.

५. विं.सं २०६७ पछी योग्य समये ट्रस्टनुं विसर्जन करी देवाशे.

अन्ते वाचक वर्गने नम्र विनंति करीए छीए के प्रमादवश आ

प्रकाशनमां कोई प्रकारे त्रुटीओ रही गई होय तो सूचित करशो जेथी पुनरावृत्तिमां सुधारो वधारो करी शकीशुं.

- लि. श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टवती

श्री सोमचंद भाणजी लालका

श्री जेन्तीलाल जेठाभाई मैशेरीना

सादर जयजिनेंद्र

अनुक्रमणिका

१. जीवविचार प्रकरण - पद्यानुवाद	१-१०
२. नवतत्त्व प्रकरण - पद्यानुवाद	११-२१
३. दंडक प्रकरण - पद्यानुवाद	२२-२८
४. लघु संग्रहणी - पद्यानुवाद	२९-३४
५. चैत्यवंदन भाष्य - पद्यानुवाद	३५-४१
६. गुरुवंदन भाष्य - पद्यानुवाद	४२-४५
७. देववंदन भाष्य - पद्यानुवाद	४६-५०
८. कर्मविपाक कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद	५१-६१
९. कर्मस्तव कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद	६२-६७
१० बंधस्वामित्व कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद	६८-७३
११. षडशीति कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद	७४-८४
१२. शतक कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद	८५-९४
१३. सप्ततिका कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद	९५-१०२

जीवविचार प्रकरण - पद्यानुवाद

रचयिता

कच्छ हालार देशोद्धारक - अचलगच्छेश प. पू. आ. भ.
श्री गौतमसागरसूरीश्वरजी म. सा. ना प्रतापी पट्टधर
कलिकाल कल्पतरु जंगमयुगप्रधान अचलगच्छाधिपति
प. पू. आ. भ. श्री गुणसागरसूरीश्वरजी महाराजा

जीवविचारनो गुर्जर भाषामां पद्यानुवाद

वीर जिन नमी जीव भेद कहुं, संक्षेपे प्राक् सूरिवरोदितं
मुक्त संसारी बे भेद स्थावर, त्रस संसारी जिनोदितं
पृथ्वी अप तेउ वाउ वनस्पति,
एकेन्द्रि बि ति चउ पंचेन्द्रिय छे
हवे पृथ्वीकायादि एकेन्द्रियथी पंचेंद्रि जीवो कहेवाय छे १
स्फटिक मणिरत्न विद्रुम परवाळां, तुडी हरताल मनशीला
सुवर्णादि धातु लवणादि खारो पारो, अबरखि सुरमो हिंगुला
खडी रमची अरणेटो मट्टी पत्थर, जातिओ पृथ्वीकाय छे
भौम आकाशी झाकळ हिम करादि जल,
घनोदध्यादि अपकाय छे २
जाल अंगारा तणखा उल्कापात,
वीजळी आदि अग्निकाय छे
उद्भ्रामक उत्कालिक मंडलि महाशुद्ध,
तनुघनादि वाउकाय छे

एक शरीरे अनंता जीवोवाळी, साधारण वनस्पतिकाय छे
कंदा अंकुर किसलय पंचकुगी सेवाळ,
आर्द्रत्रिक सर्व कोमळ फळ छे ३
थोर कुंवार गुग्गुल गडुशिणादि पत्र,
अनेक भेदे अनंतकाय छे
छेदी उगे गुप्त नसो पर्व समभंग, शास्त्र कहे अनंतकाय छे
जस फळ फूल छाल काष्ठ मूळ पत्र बीज,
ए साते स्थाने पृथक् जीव छे
ते एक शरीरे एक जीववाळी बहु भेदे
प्रत्येक वनस्पति(काय) छे ४
वळी आलोकमां प्रत्येक तरु विण,
पृथ्वीकायादि पांचे सूक्ष्म छे
जीवो ए अंतमुहुर्त आयुवाळा अदृश्य छे एकेन्द्रिय छे
शंख कोडा कोडी छीप गंडुल, जळो चंदनक अळशिया
लाळिया क्रमी पोरा धुण, चुडेलादि जीवो छे बेइन्द्रिया ५
मांकड जू कीडी मंकोडा उद्धोही, सावा ईयळ घीमेल तिम
कानखजूरा ईन्द्रगोप गींगोडा विष्टा,

छाण कीडा गोपालिक ईम
धनेडा कुंथुआ गद्धैयादि जीवो, जाणो सावि तेइन्द्रिया
वींछी भमरा भमरी बगाई मच्छर,
डांस माखी तीड करोळिया ६
इत्यादि जीव चोरिन्द्रियो कह्या, हवे कहुं पंचेंद्रिया
तिर्यंच मनुष्य नारक देवो, ए चार भेदे पंचेंद्रिया
सुसुमार काचबा ग्राह मगरो, विविध माछलां जळचरो
बळदादि चोपगा सर्पादि उरचर,
नोळियादि भुजचर स्थलचरो ७
रोमपक्षी चर्मपक्षी खेचरो, नरलोकमां सुप्रसिद्ध छे
नरलोक बही वितत पक्षी, समुद्गक पक्षी एवां पक्षी छे
ए तिर्यंच पंचेंद्रिय कह्या, कहुं मनुष्य पंचेंद्रियो हवे
कर्म-अकर्म भूमिना अंतरद्वीपना, त्रणसो त्रण भेद नर सवे ८
रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुका, प्रभा चोथी छे पंकप्रभा
तिम धूमप्रभा छट्ठी तमप्रभा, सातमी नरक तमःतमप्रभा
साते नरकना आ गोत्र छे, गोत्र नाम प्रमाणे परिस्थिति तस
घमा वंश शेला अंजणा रीठा, मघा माघवती नाम जस ९

दश भवनपति आठ व्यंतर, पंच ज्योतिषी बे वैमानिक छे
ग्रैवेयक अनुत्तर कल्पातीत छे, अन्य देवो कल्पोपपन्न छे
इशान लगी नर जिम विषय सेवी, उपर स्पर्श रूपादि य
हवे देहमान आयुष्य स्वकाय स्थिति,
प्राण योनि संख्या कहेवाय १०
सूक्ष्म बादर पृथ्वी अप तेउ वाउ, साधारण वनस्पतिकाय छे
ए सर्व अंगुल असंख्यातमा, भागे देहवाळा जीव छे
देह बादर प्रत्येक वनस्पतिनो एक,
सहस्र योजन साधिक छे
सूक्ष्म पृथ्वी अप तेउ वाउकायनुं, आयुष्य अंतरमुहूर्त छे ११
सूक्ष्म बादर साधारण वनस्पतिकाय, आयुष्य अंतरमुहूर्त छे
हवे बादर एकेन्द्रियनुं कहुं, पृथ्वीनुं बावीश हजार छे
सात हजार अपकाय त्रि अहोरत्र, तेउकायनुं आयुष्य छे
वाउकायनुं त्रण सहस्र प्रत्येक, वनस्पतिनुं दश सहस्र छे १२
स्वकायस्थिति पृथ्वी अप तेउ वाउ, प्रत्येक वनस्पतिनी छे
ते असंख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, साधारण वणनी अनंती छे
सर्व एकेंद्रियोने चार प्राण स्पर्शेंद्रिय, आयु श्वास बळ काय छे

सात सात लाख योनि पृथ्वी अप तेउ,

वाउकायनी भाखी छे १३

साधरण वनस्पति चौद लाख योनि,

प्रत्येक वण दश लाख छे

बेईन्द्रिय देह बार योजन, आयु बार वर्ष स्वकायस्थ छे

संख्यात वर्ष छ प्राण स्पर्शेंद्रिय, रसेंद्रिय आयुष्य छे

श्वासोश्वास काय बळ वाणी बळ वळी,

योनिओ तो बे लाख छे १४

तेईन्द्रिय देह त्रण गाउ, ओगणपचास दिन आयुष्य छे

स्वकाय स्थिति संख्याता वर्ष, घ्राणेन्द्रिय सह सात प्राण छे

तास योनि बे लाख कही चौरेन्द्रिय, एक योज़न देह छे

आयु छ मास स्वकायस्थिति, संख्यात वर्ष आठ प्राण छे १५

चक्षुरिंद्रिय तिम बे लाख योनि, हवे तिर्यंच पंचेंद्रिय छे

ते गर्भज समुर्च्छिम जल थल खेचर, उर भूज परिसर्प भेदे छे

गर्भज समुर्च्छिम जलचरो एक, सहस योजनदेही छे

आयु पूर्व क्रोड वर्ष सात आठ भव,

स्थिति दश नव प्राण छे १६

स्थळचर चतुष्पद गर्भज छ गाउ, त्रण पल्य दश प्राण छे
समुर्च्छिम गाउ पृथकत्व चोर्याशी, सहसाब्द नव प्राण छे
गर्भज उरपरिसर्प योजन सहस, पूर्व क्रोड प्राण दश
समुर्च्छिम योजन पृथकत्व त्रेपन, सहस वर्ष नव प्राण तस १७
गर्भज भुजपरिसर्प गाउ पृथकत्व, पूर्व क्रोड प्राण दश
समुर्च्छिम धनुष्य पृथकत्व बेंताळीश, सहसाब्द नव प्राण तस
गर्भज खेचर धनुष्य पृथकत्व बहुंतेर,
पल्य असंख्यांश प्राण दश
समुर्च्छिम धनुष्य पृथक्त्व बहुंतेर, सहस वर्ष नव प्राण तस १८
सर्व तिर्यंच पंचेंद्रिय सात आठ भव, चार लाख छे योनि तस
गर्भज मनुष्यं त्रण गाउ त्रण पल्य, सात आठ भव प्राण दश
समुर्च्छिम अंगुल असंख्यांश, अंतः मुहूर्त सात भव प्राण नव
चौद लाख मनुष्यनी योनि छे,
कह्यां बे गतिनां पांच द्वार रव १९
सर्व नारकोमां स्वकायस्थिति नहि, प्राण दश योनि लाख चार
पहेली नरके पोणा आठ धनु, छ अंगुल देह एक सागर
बीजी नरके साडा पंदर धनु, बार अंगुल देह त्रण सागर

त्रीजी नरके धनु सवा एकवीश, देह आयु सात सागर २०
चोथी नरके धनु साडा बासठ, देह आयु दश सागर
पांचमी नरके धनु सवासो देह, आयु सत्तर सागर
छट्ठी नरके धनु अढीसो देह, आयु बावीश सागर
सातमी नरके धनु पांचसो देह, आयु तेंत्रीश सागर २१
नारकी मरी नारकी न थाय, नारकी देव थाय नहि
तिम देव मरी नहि देव थाय, देव नारकी थाय नहि
भवनपति व्यंतर ज्योतिषी, वैमानिक देव भेद चार
देवमां स्वकाय स्थिति नथी, दश प्राण योनि लाख चार २२
भवनपति व्यंतर ज्योतिषी, सौधर्म ईशान देह सात कर
दश भवनपतिमां असुरकुमारे, आयु साधिक एक सागर
बाकीना नवमां बे पल्योपम, कांईक उण कहे तीर्थंकर
एक पल्योपम व्यंतर आयुष्य छे, आयु कथन उत्कृष्ट स्थर २३
ज्योतिषी कहुं चंद्र एक पल्योपम, एक लाख दर्ष आयुधर
सूर्य एक पल्योपम एक हजार वर्ष, आयुषी महा तेजधर
ग्रह एक पल्योपम आयु नक्षत्र, अर्ध पल्योपम आयुधर
तारा पा पल्योपम आयु पांचे, असंख्या कहुं वैमानिकवर २४

सौधर्मे बे सागर इशाने साधिक, बे सागरोपम आयु छे
सनतकुमार माहेंद्रे छ हाथ, सात सागर साधिक आयु छे
ब्रह्मलांतक पांच हाथ दश ने चौद, सागरोपम आयु छे
महाशुक्र सहस्रारे चार हाथ, सत्तर ने अढार सागर छे २५
आनत प्राणत आरण अच्युते, त्रण हाथ देहमान छे
अनुक्रमे ओगणीश वीश एकवीश, बावीश सागर आयु छे
ग्रैवेयक सुदर्शन सुप्रतिबद्ध, मनोरम सर्वतोभद्र छे
सुविशाळ सुमनस सौमनस्य प्रियंकर, नंदीसर ए नव छे २६
नव ग्रैवेयके बे हाथ देह आयु, वृद्धि एक एक सागर
आयु त्रेवीशथी एकत्रीश सागर, कहुं हवे पांच अनुत्तर
विजय विजयंत जयंत अपरा-जित सर्वार्थसिद्ध छे
एक हाथ देहमान एकत्रीशथी, तेत्रीश सागर आयु छे २७
पथ्वी अप तेउ वाउ वण साधारण, सूक्ष्म बादर भेद दश
बादर प्रत्येक वनस्पति बि ति, चउरिंद्रिय मळी चउदश
जल स्थल खेचर उर भुज परिसर्प,
गर्भज समुर्च्छिम सह चउवीश
पांचसो त्रेसठ भेदमां तिर्यंचना, पर्याप्त अपर्याप्त अडतालीश २८

सात नरकना सात पर्याप्त अपर्याप्त, मळी चउदश नरकना
पांच पांच भरत ऐरवत महाविदेह, पंदर कर्मभूमि क्षेत्रना
हिमवंत हिरण्यवंत हरिवर्ष रम्यक्, देवकुरु उत्तरकुरु त्रीश ए
त्रीश अकर्मभूमि छप्पन अंतरद्वीप, मळी एकसो एक भेद ए २९
मनुष्यो गर्भज पर्याप्ता अपर्याप्त, समुर्च्छिम अपर्याप्त छे
गर्भज समुर्च्छिम मनुष्यना मळी, त्रणसो त्रण ए भेद छे
दश भवनपति पंदर परमाधामी, सोळ व्यंतर वाणव्यंतरना
चरस्थिर ज्योतिषी दश, दश तिर्यंक्,
जृंभक नव लोकांतिक देवना ३०
त्रण किल्बिषिक बार देवलोक नव ग्रैवेयक पांच अनुत्तरना
ए नवाणु पर्याप्त अपर्याप्त मळी, एकसो अठाणु देवना
नरक चौद तिर्यंच अडताळीश, मनुष्य त्रणसो त्रण सवि
पांचसो त्रेसठ जीव भेद थया, भवमुक्त था धर्म करी भवि ३१
पांच ईंद्रिय त्रण योग आयु श्वासोश्वास ए दश प्राण छे
प्राणनो वियोग ते मरण छे जीव योनि चोर्याशी लाख छे
सिद्धोने शरीर आयु स्वकाय स्थिति, प्राण योनि ए कांई नहीं
सादि अनंत स्थिति अनंत सुखमां, रमे लोकांते मोक्ष महीं ३२

अनंतवार अनंत दुःख सह्यां, जीवे धर्म कर्या विना
कर धर्म टळे दुःख फळ मेळवी, घाटकोपर पार्श्व-प्रासादना
बे हजार आडत्रीश जेठ सुदि पांचमे, रचेल मुंबईपुरीए
अचलगच्छपति आर्य कल्याण, गौतम नीति गुण सूरिए ३३

इति जीवविचार प्रकरणनो गुर्जरभाषामय पद्यानुवाद संपूर्ण

नवतत्त्व प्रकरण - पद्यानुवाद

रचयिता

कच्छ हालार देशोद्धारक - अचलगच्छेश प. पू. आ. भ.
श्री गौतमसागरसूरीश्वरजी म. सा. ना प्रतापी पट्टधर
कलिकाल कल्पतरु जंगमयुगप्रधान अचलगच्छाधिपति प.
पू. आ. भ. श्री गुणसागरसूरीश्वरजी महाराजा

नवतत्त्व प्रकरणनो पद्यानुवाद

(राग- मंदिर छो मुक्ति तणा...)

१. मंगलाचरण अने नवतत्त्व नाम

प्रभु वीर नमी कहुं संक्षेपे, जीव हितार्थे तत्त्व बोध लव
जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव संवर,
निर्जरा बंध मोक्ष तत्त्व नव

२. नवतत्त्वना भेद

जीव सजीव चौद चौद, पुण्य बेंताळीश पाप ब्याशी भेदे छे १
आश्रव बेंताळीश संवर सत्तावन, निर्जरा बार भेदे छे

३. जीवतत्त्व अने तेना भेदो

बंध चार मोक्ष नव भेदे जीव, चेतना लक्षण एक भेदे छे
जीव त्रस स्थावर बे भेदे छे, त्रण वेदथी त्रण भेदे छे
चार गतिए जीव चार भेदे छे, पांच इंद्रिये जीव पांच भेदे छे
छे छकायथी छ भेदे जीव कहुं, जीव जिम चौद भेदे छे २

४. संसारी जीवना चौद भेदो

सूक्ष्म बादर एकेंद्रिय बि ति चउरिंद्रि, संज्ञी असंज्ञी पंचेंद्रिया

ए साते पर्याप्त अपर्याप्त होय, जीव ईम चौद भेदिया

५. जीवनुं लक्षण

जीव लक्षण ज्ञान दर्शन चारित्र, तप वीर्य उपयोग
जेमां ए छ लक्षण होय नहि, ते जीव नहि कहे ज्ञानी लोग ३

६. छ पर्याप्तिओ

आहार शरीर इंद्रिय श्वासोश्वास भाषा, मन छ पर्याप्ति छे
एकेंद्रि चार बि ति चउरिंद्रि, असंज्ञी संज्ञीने छ छे

७. दश प्राण

पांच इंद्रिय त्रण बळ श्वासोश्वास, आयु ए दश प्राण छे
एक बि ति चउरिंद्रिने चार छ सात आठ,
असंज्ञी संज्ञीने नव दश छे ४

८. अजीवतत्त्वना चौद भेदो

धर्म अधर्म आकाशास्तिकाय,
खंध देश प्रदेशे त्रण त्रण भेदे छे
खंध देश प्रदेश परमाणु पुद्गलो, काळ एक अजीव चौद छे

९-१०. अजीवनो स्वभाव

गति सहायी धर्मास्तिकाय स्थिरता, सहायी अधर्मास्तिकाय छे

अवकाश दे ते आकाश पुद्गलो, सडन पडन विध्वंसी छे ५

११. पुद्गलोनुं लक्षण

शब्द अंधकार प्रकाश छाया प्रभा आतप, ए पुद्गलो ज छे
रूप गंध रस स्पर्शवाळा पुद्गल, लक्षण ए पुद्गलोनां छे

१२. काळनुं स्वरूप

एक क्रोड सडसठ लाख सत्तोतेर सहस,
बसो सोळ आवली छे
बे घडीना एक मुहूर्तमां समय आवली, मुहूर्त ए काळ छे ६

१३. व्यवहारमां उपयोगी काळ

दिनरात शुक्ल कृष्ण पक्ष मास वर्ष, पल्योपम सागरोपमा
उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, छ छ आरा काळचक्र काळ भेदमां

१४. छ द्रव्यनो विचार

छ द्रव्यमां परिणामी जीव रूपी प्रदेशी, एक क्षेत्र क्रियानी
नित्य कारण कर्ता सर्वग अप्रवेशी, विचारणा छे करवानी ७

१५-१६. पुण्यतत्त्वना बेंताळीश भेदो

शाता उच्च गोत्र देव मनुष्य गति, आयु अनुपूर्वी तिर्यंचायु छे
पंचेन्द्रि जाति पांच शरीर अंगोपांग, पहेला संघयण संस्थान छे

शुभ वर्ण गंध रस स्पर्श शुभ विहायोगति उद्योत आतप छे
निर्माण जिननाम कर्म पराघात, अगुरुलघु श्वासोश्वास छे ८

१७. त्रसदशक

त्रस बादर पर्याप्त प्रत्येक स्थिर शुभ,
सुभग सुस्वर आदेय जस
ए त्रस दशक मळी पुण्य तत्त्वना, कह्या भेद बेंताळीश

१८-१९. पापतत्त्वना ब्यासी प्रकार

पांच ज्ञानावरणी, नव दर्शनावरणी, पांच अंतराय नीच गोत्र छे
अशाता मिथ्यात्व स्थावर दशक, नरकायु गति अनुपूर्वी छे ९
तिर्यंचानुपूर्वी गति कषाय सोळ, नोकषाय नव उपघात छे
एक बि ति चउरिंद्रि जाति दुख गई, अशुभ वर्ण चतुष्क छे
पहेला विना पांच संघयण पांच संस्थान, स्थावर अपर्याप्त छे

२०. स्थावर दशक

सूक्ष्म साधारण अस्थिर अशुभ दुर्भाग्य,
दुःस्वर अनादेय अजश छे१०
पापतत्त्वना ब्यासी भेद कह्या, हवे आश्रवना बेताळीश छे

२१. आश्रवतत्त्वना बेंताळीश प्रकार

पांच इंद्रिय चार कषाय, पांच अव्रत त्रियोग आश्रव छे
पच्चीश क्रिया सह थाय बेंताळीश, क्रियाओ कहेवाय छे

२२-२४. पच्चीस क्रियाओ

कायिकी अधिकरणिकी प्राद्वेषिकी परितापनिकी छे ११
प्राणातिपातिकी आरंभिकी पारिग्रहिकी माया प्रत्ययिकी
मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी अप्रत्याख्यानिकी द्रष्टिकी स्पृष्टिकी
प्रातित्यकी सामंतोपनिपातिकी, नैशस्त्रिकी स्वहस्तिकी
आज्ञापनिकी वैदारणिकी, अनाभोगिकी प्रायोगिकी १२
अनवकांक्ष प्रत्ययिकी प्रेमकी सामुदानिकी,
द्वेषिकी इरियापथिकी

२५. संवरतत्त्वना सतावन प्रकार

हवे कहुं सतावन भेदे संवर, पांच समिति त्रण गुप्तिकी
बावीश परिषह दश यतिधर्म, बार भावना पांच चारित्र छे

२६. पांच समिति अने त्रण गुप्ति

इरिया भाषा एषणा आदान निक्षेप, पारिठापनिका समिति छे १३

२७-२८. बावीस परिषह

मन वचन काया त्रण गुप्तिओ, क्षुधा पिपासा शीत उष्ण दंश छे

अचेल अरति स्त्रीओ चर्या, नैषेधि शय्या आक्रोश छे
वध याचना अलाभ रोग तृण, मल सत्कार अज्ञान छे

२९. दश यतिधर्म

प्रज्ञा सम्यक्त्व ए बावीश परिसह, क्षमा मृदुता आर्जव मुक्ति छे १४
तप संयम सत्य शौच आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दश यतिधर्म छे

३०-३१. बार भावना

अनित्य अशरण संसार एकत्व, अन्यत्व अशुचि आश्रव छे
संवर निर्जरा लोकस्वरूप दुर्लभ बोधिधर्म बार भावना छे

३२-३३. पांच चारित्र

सामायिक छेदोपस्थापनीय परिहारविशुद्धि चारित्र छे १५

३४-३६. निर्जरातत्त्व (छ बाह्य/छ अभ्यंतर तप)

सूक्ष्मसंपराय यथाख्यात चरण, सत्तावन संवर भेद छे
अणसण ऊणोदरी वृत्तिसंक्षेप रसत्याग, कायक्लेश संलीनता छे
प्रायश्चित विनय वैयावच्च स्वाध्याय, ध्यान त्याग तप बार भेद छे
छ बाह्य तप छ अभ्यंतर तप, ए बार निर्जरा भेद छे १६

३७. बंधतत्त्व

प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेश ए चार भेदे बंध तत्त्व छे

प्रकृति स्वभाव स्थिति काळ अनुभाग रस, प्रदेश दळसमूह छे

३८. आठ कर्मनो स्वभाव

पाटो प्रतिहारी असि मदिरा बेडी, चितारा कुंभार भंडारी जिम

३९. आठ कर्मोनी प्रकृति अने उत्तर प्रकृति

ज्ञान दर्शनावरणी वेदनी मोहनी आयु, नाम गोत्र विघ्न तिम १७

४१-४१. उत्कृष्ट स्थिति बंध

पांच नव बे अठ्यावीश चार एकसो त्रण, बे पांच क्रमथी भेद छे
ज्ञान दर्शनावरणी वेदनी अंतराय त्रीश कोडाकोडी सागर छे
नामगोत्र वीश मोहनी सित्तेर, कोडाकोडी सागर मान छे
आयु तेत्रीश सागर ए उत्कृष्ट स्थितिबंध प्रमाण छे १८

४२. जघन्य स्थिति बंध

जघन्य स्थिति बार मुहूर्त वेदनी, आठ मुहूर्त नाम गोत्र छे
शेष कर्मोनो अंतमुहूर्त स्थिति बंध, ए बंध तत्त्व छे

४३. मोक्षतत्त्वनां नव अनुयोग द्वार

सत्पद प्ररूपणा द्रव्य प्रमाण क्षेत्र स्पर्शना काळ अंतर छे
भाग भाव अल्पबहुत्व ए मोक्ष तत्त्वना नव भेद छे १९

४४. सत्पद प्ररूपणा

अर्थवाळुं मोक्ष एक पद होवाथी मोक्ष तत्त्व विद्यमान छे

४५. चौद मूळ मार्गणा

नीति इंद्रियादि मार्गणाओथी ए मोक्ष तत्त्व प्ररूपाय छे
गति इंद्रिय काय जोग वेद कषाय, नाण संजम दंसण लेश्या छे
भव्य सम्यक्त्व संज्ञी आहार, ए मार्गणाना चौद प्रकार छे २०

४६. कई मार्गणाओ द्वारा मोक्ष छे ?

मनुष्य पंचेंद्रि त्रस भव्य संज्ञी, यथाख्याती क्षायिक सम्यक्त्वी छे
अनाहारी केवळ ज्ञानदर्शनी ए मार्गणाए मोक्षे जाय छे

४७. द्रव्य प्रमाण अने क्षेत्र द्वार

तथा द्रव्यथी सिद्ध जीव द्रव्यो, मोक्षमांहे अनंत छे
असंख्यातमा लोकभागे, क्षेत्रथी सिद्ध एक के सर्व छे २१

४८. स्पर्शना, काळ अने अंतर द्वार

क्षेत्रथी अधिक स्पर्शना एक सिद्ध काळ सादि अनंत छे
सिद्ध जीवने अंतर नथी, कारण पडवानो ज अभाव छे

४९. भाग अने भाव द्वार

सर्व जीवना अनंतमे भागे, सर्व सिद्धना जीव छे

सिद्ध ज्ञान दर्शन क्षायिक भावे, जीवत्व पारिणामिक छे २२

५०. अल्प-बहुत्व द्वार

सिद्ध थोडा नपुंसक, संख्यागुण स्त्री, तेथी संख्यगुण पुरुष छे
कह्युं मोक्ष तत्त्व इति संक्षेपे, नव तत्त्वोनुं आ कथन छे

५१. नवतत्त्व जाणनारनुं फळ

जीवादि नव तत्त्वो जे जाणे, ते भवी सम्यक्त्वी छे
जाणे न पण भावे सद्दहे ते, जीव पण सम्यक्त्वी छे २३

५२. सम्यक्त्व एटले ?

जिनेश्वरोनां कहेलां वचनो, सर्वे अतिशय सत्य छे
एवी बुद्धि मनवाळा जीवने, निश्चळ ज सम्यक्त्व छे

५३. सम्यक्त्वनो लाभ

अंतमूहुर्त पण जेहने, सम्यक्त्व तारक स्पर्श्युं छे
पुद्‌गल परावर्त अर्ध तेहनुं, संसारमां परिभ्रमण छे २४

५४. पुद्‌गल परावर्तन एटले ?

अनंत उत्सर्पिणी अवसर्पिणीनो एक पुद्‌गल परावर्त छे
एवा अनंत भूतकाळे थया, हवे अनंतगुणा थनार छे

५५. पंदर भेदे सिद्ध थवाय

पंदर भेदे सिद्ध जिन अजिन, तीर्थ अतीर्थ गृही अन्य स्वलिंगे छे
सिद्ध नर स्त्री नपुंसक प्रत्येक स्वयंबुद्ध,
बुद्धबोधित एक अनेक छे २५

५६-५९. पंदर भेदे सिद्ध थवाना दृष्टांतो

जिन सिद्ध अरिहंत अजिन सिद्ध,
जिन विण अनंत मुनि आदि छे
तीर्थ सिद्ध गणधर आदि छे, अतीर्थ सिद्ध मरुदेवा छे
गृहीलिंग सिद्ध भरतादि, अन्यलिंग सिद्ध वल्कलचीरी छे
सिद्ध थया स्वलिंगे जैन मुनि, स्त्रीलिंगे सिद्ध चंदनादि छे २६
पुंलिंग सिद्ध गौतमादि, नपुंसक सिद्ध गांगेय आदि छे
प्रत्येकबुद्ध स्वयंबुद्ध सिद्ध, मुनि करकंडू कपिलादि छे
बुद्धबोधित गुरुबोधित कह्या, एक-एक समये एक सिद्ध छे
एक समये सिद्ध अनेक थया, ते अनेक-सिद्ध कहेवाय छे २७

६०. केटला जीवो मोक्षे गया ?

कोई क्यारे पण प्रश्न करे, त्यारे जैनशासने ए ज उत्तर छे
एक निगोदना अनंतमा भागना जीवो मोक्ष पामेल छे

बे हजार आडत्रीश जेठ वदि दशमे मुंबई माटुंगा करी
रचना अचल गच्छेश आर्यकल्याणगौतम गुणसूरि

इति नवतत्त्व प्रकरणनो गूर्जर भाषामय पद्यानुवाद संपूर्ण

दंडक प्रकरण - पद्यानुवाद

रचयिता

कच्छ हालार देशोद्धारक - अचलगच्छेश प. पू. आ. भ.
श्री गौतमसागरसूरीश्वरजी म. सा. ना प्रतापी पट्टधर
कलिकाल कल्पतरु जंगमयुगप्रधान अचलगच्छाधिपति
प. पू. आ. भ. श्री गुणसागरसूरीश्वरजी महाराजा

दंडक प्रकरणनो पद्यानुवाद

(राग- हरिगीत छंद)

१. मंगलाचरण

चोवीश जिनवरने नमी, तस सूत्रवर्णन लेशथी
दंडक पदोथी स्तवीश ए जिन, सुणो भव्यो भावथी.

२. चोवीश दंडक

एक नारकी दश भवनपति, पांच पृथ्व्यादि बेइंद्रियादि त्रण
गर्भज तिर्यंच नर बे व्यंतर, ज्योतिषी वैमानिक त्रण १

३-४. चोवीश द्वार

ए चोवीश दंडक संक्षेपे, चोवीश द्वारे विचाराय छे
देह अवगाहना संघयण संज्ञा, संस्थान कषाय लेश्येन्द्रिय छे
समुद्घात बे दृष्टि दर्शन ज्ञानयोग, उपयोग उपपात च्यवन छे
स्थिति पर्याप्ति किमाहार आगति गति वेद, ए द्वार चोवीश छे २

५. देह द्वार

वायु गर्भज तिर्यंचे चार देह छे, मनुष्योमां पांच देह छे
शेष जीवोना त्रण त्रण, औदारिक तैजस कार्मण देह छे

६-८. अवगाहना द्वार

अंगुलना असंख्यातमा भागना, जघन्यथी सर्व जीव छे
पृथ्वी अप तेउ वाउना पण, अंगुलासंख्य भागे देह छे ३
उत्कृष्टथी पांचसो धनुष्य नारक छे, सात हाथ देव छे
गर्भज तिर्यंच योजन हजार, एथी वनस्पति साधिक छे
त्रण गाउना तेइन्द्रि मानव, बार गाउना बेइन्द्रि छे
चार गाउना चोरिंद्रि छे, हवे वैक्रिय देह कहेवाय छे ४
प्रारंभे वैक्रिय शरीर अंगुल संख्य भागे होय छे

९. उत्तर वैक्रिय शरीरनी उत्कृष्ट अवगाहना

देवोनुं योजन लाख देह, मानवनुं साधिक लाख छे
नवसो योजन तिर्यंचनुं नारकोनुं बेवडुं थाय छे

१०. विकुर्वणनो काळ

उत्कृष्ट विकुर्वण काळ मनुष्य तिर्यंचनो चार मुहूर्त छे ५
देवोनो पंदर दिवस छे, नारकोनो अंतर्मुहूर्त छे

११. संघयण द्वार

संघयण नथी देव नरक स्थावरे, छेवठुं विकलेन्द्रिमां छे
गर्भज मनुष्य तिर्यंच पंचेन्द्रि छ छ संघयणवाळा छे

१२-१३. संज्ञा अने संस्थान द्वार

सर्व जीवोमां चार दश के सर्वे सोळ संज्ञा होय छे ६
समचतुरस्त्र संस्थानी देवो छे, छ संस्थानी नरतिर्यंच छे
हुंड संस्थानी विकलेंद्रि नारक, विविधाकार वर्ण काय छे
ध्वजाकार वायु सूई आकार, तेउ बुद्‌बुद् आकार अपकाय छे

१४. कषाय अने लेश्या द्वार

चंद्र मसुराकार पृथ्वीकार, सर्व जीवोने चार कषाय छे ७
गर्भज तिर्यंच मनुष्य छ लेश्या, वैमानिके त्रण लेश्या छे
नारक तेउ वाउ विकलेंद्रिमां, लेश्या त्रण पहेली ज छे
तेजो लेश्या ज्योतिषीने चार लेश्या शेष सर्वने छे

१५. इंद्रिय द्वार

स्थावर एकेन्द्रि विकलेन्द्रि बितिचउरिंद्रि शेष पंचेन्द्रि छे ८

१६-१९. समुद्‌घात द्वार दृष्टि द्वार अने दर्शन द्वार

कषाय वेदना मरण वैक्रिय तेजस आहारक केवली छे
ए सात समुद्‌घात मनुष्ये गर्भज तिर्यंच, देवोमां पांच छे
नारक वाउमां चार समुद्‌घात शेषे समुद्‌घात त्रण छे
विकलेंद्रियोने बे दृष्टि छे, एकेंद्रियो मिथ्याद्रष्टि छे ९

शेष जीवोने त्रण दृष्टि, मिथ्या मिश्र सम्यग् द्रष्टि छे
एकेंद्रि द्विति इंद्रिये अचक्षुदर्शन, चोरेंद्रिमां चक्षु अचक्षु छे
मनुष्योमां दर्शन चारे छे, त्रण दर्शन शेष जीवोमां छे

२०. ज्ञान अने अज्ञान द्वार

तिर्यंच पंचेंद्रिय देव नारकमां, त्रण त्रण ज्ञान अज्ञान छे १०
स्थावरे बे अज्ञान, विकलेंद्रिमां बे बे ज्ञान अज्ञान छे
मनुष्योमां मति श्रुति अवध्यादि, पंच ज्ञान, त्रण अज्ञान छे

२१. योग द्वार

अगियार योग सुर नारकना छे, तिर्यंचना तेर योग छे
पंदर मनुष्ये, विकले पांच वाउ, एकेंद्रिमां त्रण योग छे ११

२२. उपयोग द्वार

पांच ज्ञान, त्रण अज्ञान, चार दर्शन ए बार उपयोग छे
उपयोग देव नारक तिर्यंचमां नव, मनुष्यमां बार छे
बिति इंद्रिये पांच चउरिंद्रिये छ, एकेंद्रिमां त्रण उपयोग छे
संख्यात असंख्यात एक समयमां, मरण उत्पत्ति थाय छे १२

२३. उत्पत्ति अने च्यवन द्वार

तिर्यंच विकलेंद्रि नारक देवोमां, संख्यात मनुष्यमां थाय छे
वनस्पति अनंता शेष स्थावरे, असंज्ञी मनुष्य असंख्य छे

२४-२७. आयुष्य (स्थिति) द्वार

पृथ्वीकायनुं बावीश सहस, अपकाय वायु सात सहस छे
तेउकायायु त्रण दिवस, वाउकायायु त्रिसहस वर्ष छे १३
वनस्पति आयु दश सहस वर्ष, बेइंद्रि आयु बार वर्ष छे
तेइंद्रि आयु ओगणपचाश दिन, चउरिंद्रि आयु छ मास छे
त्रण पल्योपमायु नर तिर्यंचनुं, तेत्रीश देवनारके छे
व्यंतरे पल्योपम, ज्योतिषे वर्ष लक्षाधिक पल्य आयु छे १४
असुरायु साधिक सागर, नव निकाये देशूण बे पल्य छे
उत्कृष्ट आयुष्य कह्युं, हवे जघन्य आयुष्य कहेवाय छे

२८. जघन्य आयुष्य

पृथ्वी अप तेउ वाउ वण बितिचउरिंद्रि, पंचेंद्रि तिरिनर ए दश छ
दशे अंतर्मुहूर्तायु, वैमानिके पल्य, ज्योतिषे पल्य अष्टमांश छे१५
दशसहस्र वर्षायु भवनपति व्यंतर नारक जघन्य आयु छे

२९. पर्याप्ति अने आहार द्वार

देव मनुष्य तिर्यंच नारकोने छ पर्याप्ति, स्थावरे चार छे
विकलेंद्रिने पांच पर्याप्ति, सर्वेने छये दिशिनो आहार छे
पर्याप्त गर्भज तिर्यंच मनुष्यो, चउ भेद देवोमां जाय छे १६

३०. संज्ञा द्वार

देवतिर्यंच नरके दीर्घकालिका, विकले हेतूपदेशिकी छे
मनुष्योमां दीर्घकालिकी कोई दृष्टिवादोपदेशिकी छे

३१-३७. गति-आगति द्वार

सर्वे स्थावरो संज्ञा रहित, हवे आगति-गति कहेवाय छे
पर्याप्त गर्भज तिर्यंच मनुष्यो, चउ भेद देवोमां जाय छे १७
संख्यात वर्षायु गर्भज तिर्यंच, मनुष्योमां सुर आवे छे
बादर पर्याप्त पृथ्वी अप प्रत्येक, वनस्पतिमां देवो जाय छे
संख्यात वर्षायु तिर्यंच गर्भज नर, तिरि साते नरके आवे छे
साते नरकोथी नीकळी, ए ज तिर्यंच मनुष्योमां जाय छे १८
नारक विना सर्व जीवो, अप वनस्पतिमां आवे छे
पृथ्वी आदि दश पदोमां, पृथ्वी अप वनस्पति जीव जाय छे
तेउ वाउमां पृथ्वी आदि, दश पदमांथी जीवो आवे छे
पृथ्वी अप आदि नव पदोमां, तेउ वाउ उत्पन्न थाय छे १९
विकलेंद्रि दश पदमां आवे, दश पदथी विकलेंद्रिमां जाय छे
गमनागमन गर्भज तिर्यंचोनुं, सर्व जीवोमां थाय छे
मनुष्यो सर्वेमां जाय, तेउ वाउ विण मनुष्योमां जाय छे

३८-३९. वेद द्वार

त्रण वेद मनुष्य तिर्यंचमां, देवमां पुरुष स्त्रीवेद छे २०
पांचे एकेंद्रिमां बितिचउरेंद्रिमां, नारकोमां नपुंसक वेद छे
कहुं अल्पबहुत्व पर्याप्त मनुष्य, बादराग्नि वैमानिक देव छे
भवनपति नारको व्यंतरो, ज्योतिषी देवो चउरिंद्रि छे
पंचेंद्रि तिर्यंचो बेइंद्रि, तेइंद्रियो पृथ्वीकाय अप्काय छे २१
वाउकाय वनस्पतिकाय क्रमथी, जीवो एकेकथी अधिक छे
जिनदेवो मुज जीव अनंतीवार, दंडकोमां भमी पीडित छे

४०-४१. मोक्ष प्रार्थना

दंडकोमां भ्रमणथी भग्नहृदयी, दुःखित आपनो भक्त छुं
त्रण दंड विरहथी सुलभ मोक्षपद द्योने! शीघ्र दयापात्र छुं २२

४२. प्रशस्ति

जिनहंस मुनीश्वर राज्यमां, मुनि धवलचंद्रना शिष्य जे
गजसार मुनिए आत्महितकर, लखी आ विनति छे ते
बे हजार आडत्रीश अषाढ सुदि आठमे, मुंबईमां तारदेवमां
रची अचलगच्छपति गौतमनीतिगुणसूरि गूर्जर पद्यमां २३

इति दंडक प्रकरणनो पद्यानुवाद संपूर्ण

लघु संग्रहणी - पद्यानुवाद

रचयिता

कच्छ हालार देशोद्धारक - अचलगच्छेश प. पू. आ. भ.
श्री गौतमसागरसूरीश्वरजी म. सा. ना प्रतापी पट्टधर
कलिकाल कल्पतरु जंगमयुगप्रधान अचलगच्छाधिपति
प. पू. आ. भ. श्री गुणसागरसूरीश्वरजी महाराजा

लघु संग्रहणीनो पद्यानुवाद

(राग- हरिगीत छंद)

१. मंगलाचरण

नमी जगगुरु जगपूज्य सर्वज्ञ, वीतराग महावीरने
स्वपरहितार्थे सूत्रथी, कहुं, जंबूद्वीप पदार्थने

२. मुख्य दश पदार्थो

खंड योजनो वासक्षेत्रो पर्वतो कूटो श्रेणिओ तीर्थ छे
विजयो द्रहो नदीओनो संग्रह, एज अहीं संग्रहणी छे १

३-५. खंडनुं प्रमाण

भरत प्रमाणथी लाखने भागो, तो एकसो नेवु थाय छे
अथवा भरतमान एकसो नेवुए गुणो, तो एक लाख थाय छे
भरतसम खंड एक भरते, बे हिमवंते चउ हिमवंतवर्षे छे
महाहिमवंत पर्वते आठ हरिवर्ष क्षेत्रमान सोळ खंड छे २
बत्रीश खंडनिषधादि मळी त्रेसठ, सामे पण त्रेसठ खंड छे
महाविदेहना चोसठ त्रणे मळी, एकसो नेवुं थाय छे

६. योजन प्रमाण खंडो

लाखनी परिधिने तेना पा भागे गुणतां, जे खंडो थाय छे
ते सरखा चार खुणावाळा, योजन योजनना थाय छे ३

७. परिधि अने गणितपद

विष्कंभ वर्गना दशगुणानी करणी गोळ वस्तु परिधि छे
विष्कंभ पा भागे गुणेल परिधि, गोळ वस्तुनुं गणितपद छे

८. जंबूद्वीपनी परिधि

त्रण लाख, सोळ हजार, बसो सत्यावीश योजन, त्रण गाउ छे
एकसो अठ्यावीश धनु, तेर आंगळ जंबूद्वीप परिधि छे ४

९-१०. जंबूद्वीपनुं क्षेत्रफळ

सातसो नेवुं क्रोड, छप्पन लाख,
चोराणु सहस्र, दोढसो योजन छे
एक गाउ, पंदरसो पंदर धनु, साठ आंगळ जंबूद्वीप क्षेत्रफळ छे

११. जंबूद्वीपनां सात क्षेत्रो

भरतादि क्षेत्र सात, चार गोळ, चोत्रीश दीर्घ वैताढ्य छे
वक्षकार सोळ, चित्रविचित्र बे, यमक समक पहाडो छे ५

१२. पर्वतो

बसो कंचनगिरि, गजदंतगिरि, ६ वर्षधर पहाडो छे
एक मेरुगिरि मळी, बसो ओगणसित्तेर पर्वतो जंबूद्वीपे छे

१३-१७. पर्वतोनां शिखरो

सोळ वक्षस्कारे चार चार शिखरो, सोमनसे गंधमादने छे
सात सात शिखरो रूक्मी महाहिमवंते, शिखर आठ आठ छे ६
चोत्रीश वैताढ्य विद्युत्प्रभ, नीलवंत निषध माल्यवंत छे
ए सर्वे पर तिम मेरु पर, नव नव शिखर विद्यमान छे
हिमवंत शिखरी पहाड पर, शिखरो अगियार अगियार छे
ए एकसठ शिखरनी संख्या चारसो सडसठ थाय छे ७
चार सात आठ नव अगियार फूटथी सोळ,
बे बे बे ओगणचाळीशने
गुणी जुओ संख्या शिखरोनी चारसो सडसठ थाय छे ने
चोत्रीश विजये चोत्रीश ऋषभकूटो,
हरि हरिसह कूट एक एक छे
मेरुवन जंबूवृक्ष शाल्मलिवृक्ष ऋषभकूटो,
आठ आठ सर्वे साठ छे ८

१८-१९. तीर्थो अने श्रेणिओ

वरदाम मागध प्रभास तीर्थो, भरतैरवतमां छे
चोत्रीशने त्रणे गुणो, ए तीर्थोनी संख्या एकसो बे थाय छे
विद्याधरो आभियोगिक देवोनी, बे बे श्रेणिओ वैताढ्ये छे
चोत्रीशने चारे गुणतां, एकसो छत्रीश श्रेणि थाय छे ९

२०. विजयो (जमीन परना प्रदेशो)

चक्रीने जीतवा योग्य विजयो, जंबूद्वीपे चोत्रीश छे
छ पद्मादि महाद्रहो कुरुओमां दश द्रहो एम सोळ छे

२१-२५. नदीओ

गंगा सिंधू रक्ता रक्तवती ए भरतैरवते नदीओ जे छे
ते चौद चौद सहस लघुनदी साथे समुद्रमां जाय छे १०
रोहिता रोहितांशा नदी हिमवंत क्षेत्रे पूर्वपश्चिमे वहे
नदी सुवर्णकूला रूप्यकूला हिरण्यवंते पूर्वपश्चिमे वहे
अठ्यावीश अठ्यावीश सहस नदी सह जई, ए चारे समुद्रे रहे
हरिसलिला हरिकांता महानदी हरिवर्षे पूर्वपश्चिमे वहे ११
नरकांता नारीकांता महानदी रम्यक्वर्षे पूर्वपश्चिमे वहे
छप्पन्न छप्पन्न हजार नदी सह जई ए चारे समुद्रे रहे

सीतोदा नदी निषध पहाडना तिगिच्छि द्रहथी नीकळे
तेमां देवकुरुनी चोर्याशी सहस नदी भळे विदेहनी भळे १२
सोळ विजयनी बत्रीश नदी, चौद चौद सहस नदी सह भळे
पांच लाख बत्रीश सहस सर्वे नदी, सह पश्चिमे समुद्र भळे
सीता नदी पण नीलवंत पहाड केसरी द्रहथी नीकळे
तेमां उत्तरकुरुनी चोर्याशी सहस नदी भळे विदेहनी भळे १३
सोळ पूर्व विजयोनी बत्रीश नदी,
चौद चौद सहस नदी सह भळे
पांच लाख बत्रीश सहस सर्व नदी सह पूर्वे समुद्रे भळे
छ छ अंतरनदी पण विदेहनी, सीतोदा सीता नदी सह भळे
चौद लाख छप्पन्न सहस नेवुं सर्वे नदी लवणसमुद्रे मळे १४

२६. नदीओना मूळनो विस्तार

गंगा सिंधू रक्ता रक्तवती नामे चोसठे नदी विजयोनी छे
विस्तार मूळमां सवा छ योजन ए चारे नदीओनो छे
अंते विस्तार दश गणो ते साडा बासठ योजन थाय छे
बाकीनी मोटी नदीओनो बमणो बमणो विस्तार छे १५
भरतैरवतनी ए चारे नदीनो काळे फेरफार थाय छे

ए चारे नदीनुं प्रमाण कह्युं, ते पहेला आरामां होय छे

२७-२९. पर्वतोनुं प्रमाण अने तेमना रंगो

सो योजन ऊंचा कनकमय हिमवंत शिखरी पहाड छे
रूपामय रूपी सोनामय महाहिमवंत उच्च बसो योजन छे १६
चारसो योजन ऊंचा निषध नीलवंत ए बे पहाड छे
लाल सुवर्णमय निषधाद्रि वैडूर्यरत्नमय नीलवंत छे
मेरु विना ए सर्वे पर्वतो, जे अढी द्वीप मांहे छे
ते पर्वतो ऊंचाईना चोथा भागना भूमिमांहे छे १७

३०. रचयिता

जंबूद्वीपे बीजा पण अनेक शाश्वत पदार्थ रहेल छे
हरिभद्र रचित प्राकृत मूळ संग्रहणी थाय पूर्ण छे

गूर्जर पद्यना कर्ता

बे हजार आडत्रीश आषाढ वदि त्रीजे,
तिरुपति मुंबईमां महालक्ष्मीमां
रची अचलगच्छपति गौतमनीतिगुणसूरि गूर्जर पद्यमां १८

इति लघु संग्रहणीनो गुर्जर भाषामय पद्यानुवाद संपूर्ण

चैत्यवंदन भाष्य - पद्यानुवाद

रचयिता

पूज्य श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म.सा.

चैत्यवंदन भाष्य पद्यानुवाद

(राग- हरिगीत छंद)

नमुं जिनने गोयम गुरु जेवा श्री गुणसूरिने वंदन करुं,
भाष्य त्रयमां चैत्य भाष्यने संक्षिप्तमां गुर्जर पद्ये रचुं.
चैत्यवंदन लघु भाष्यनी देवेन्द्रसूरिनी रचना छे,
चैत्यवंदन महाभाष्यनी शान्तिसूरिनी रचना छे.
सर्वज्ञने वंदन करीने टीका भाष्य चूर्णिने आगमो,
चैत्यवंदन कहीश आधारे तीर्थंकर कहे ते आत्मागमो.
सूत्र रचना अनंतरागम गणधरोथी ए रचाय छे,
त्रीजुं परंपरागम जाणो सत्पुरुषोथी ए रचाय छे. १

२४ मुख्य द्वारो

त्रिक अभिगम दिशास्थिति अवग्रह वंदना प्रणिपात छे,
नमस्कार अक्षरो पदो संपदा दंडक अधिकार वंदनीय छे.
स्मरणीय जिनेश्वरोनी स्तुति निमित्त हेतु आगार दोषो२०,
काउसग्ग प्रमाण स्तवन चैत्यवंदन आशातना त्याग जोशो. २-४

१ दश त्रिक

दश त्रिक आदि चोवीश द्वारो बे हजार चुमोत्तेर स्थानो छे,
तेनो विस्तार संक्षिप्तमां हवे एने क्रमथी कहेवाय छे. ५
निस्सिहि प्रदक्षिणा प्रणाम पूजा अवस्था त्रण दिशा गणो,
प्रमार्जना वर्णादिक मुद्रा प्रणिधानादि त्रण त्रण जाणो. ६-७

निस्सिहि

त्रण स्थाने निस्सिहि कहेवाय गभारे त्रण प्रदक्षिणा थाय,
अचलगच्छना सित्तेर बोलमां त्रिक तरीके आ बे न मनाय.

प्रणाम त्रिक

त्रीजुं प्रणाम त्रिक कहे छे अंजलि अर्धावनत जणाय,
पंचांग प्रणाम त्रीजुं कहे छे जेनाथी पांच अंगो नमाय. ८-९

पूजा त्रिक

अंग अग्र भावपूजाने जाणो पंच अष्ट सर्व प्रकारे छे,
अंगपूजा विघ्नोपशामिका अग्र अभ्युदयसाधनी छे.
निर्वृत्तिकारिणी भावपूजा ए मोक्ष फळने आपनारी छे,
सत्तर एकवीश चोसठ नव्वाणुं अनेक प्रकारे गणावी छे. १०

अवस्था त्रिक - दिशिनिरीक्षणवर्जन त्रिक

पिंडस्थ ते छद्‌मस्थपणुं छे पदस्थ केवलि गणाय छे,
रुप रहित ते सिद्धपणुं छे स्नान पूजा प्रथम गणाय छे.
प्रातिहार्यथी केवलिपणुं छे सिद्धावस्था पर्यंक कायोत्सर्गे छे,
प्रभु सन्मुख दृष्टि स्थापीने बाकी त्रण दिशाने त्यागे छे. ११-१३
प्रणिधान चैत्य मुनिवंदन प्रार्थना स्वरूपने कहेजी,

वर्णादि त्रिक, मुद्रा त्रिक, प्रणिधान त्रिक

प्रमार्जना वर्ण मुद्रा त्रिक जाणो शब्द अर्थ प्रतिमा वखाणोजी,
योग जिन मुक्ताशुक्ति जाणो विस्तार एनो ग्रंथमां जाणोजी.
प्रणिधान चैत्य मुनि वंदन प्रार्थना स्वरूपने कहेजी,
मन वच कायानुं एकाग्रपणुं प्रणिधान त्रिक ए लहेजी. १४-१९

(२) पांच अभिगमो

हवे पांच अभिगमने जाणो सचित्त त्याग अचित्त अत्याग,
मननी एकाग्रताने अंजलि एक शाटि उत्तरासंग राग.
तलवार छत्र मोजडी मुगुट चामर पांचमु राजचिह्न छे,
उघाडे मस्तके प्रभुजी पासे न जवानी रीत तो प्रसिद्ध छे. २०-२१

अवग्रह

पुरुषो जमणे स्त्रीओ डाबे रहीने प्रभुने वंदन करे छे,
जघन्ये नव उत्कृष्टे साठ हाथ बाकीना मध्यम गणाय छे.
अन्य मते अडधा हाथथी साठ बार अवग्रह गणाय छे,
पांचमुं द्वार चैत्यवंदनाने त्रण प्रकारे गणावाया छे. २२

त्रण प्रकारे चैत्यवंदन

जघन्ये नमस्कारने जाणो दंडक स्तुति युगले मध्यम,
चार स्तुतिने स्तवने जाणो प्रणिधाने उत्कृष्ट चैत्यवंदन.
अन्य मते आचार्यो कहे छे एक नमुत्थुणं ए जघन्य छे,
बे के त्रण मध्यमने जाणो चार के पांच ए उत्कृष्ट छे. २३-२४

पंचांग प्रणिपात, स्तुति, अक्षर, पद, संपदा

छट्ठुं प्रणिपात सातमुं द्वार नमस्कारने कहेवाय छे,
जमीनने पांच अंग अडतां पंचांग प्रणिपात कहेवाय छे.
एक बे एकसो आठ स्तुतिथी नमस्कार प्रभुने कराय छे, २५
सोळसो सुडतालीश अक्षरो पदो संपदाओ ग्रन्थथी भणाय छे.२६-४०
आठ नव दश द्वारने जाणो तपागच्छनी मान्यता जणाय,
अन्य गच्छनी मान्यता जाणो ए प्रमाणे आ ग्रन्थ भणाय.

पांच दंडक - अधिकार

अग्यार द्वारे पांच दंडक जाणो शक्र चैत्य नाम श्रुत सिद्ध छे,
बे एक बे बे पांच प्रमाणे बारद्वार बार अधिकारे छे. ४१

चार वंदनीय

प्रथम पदोने स्तवना जाणो बेंतालीशथी आठ गाथामां, ४२-४९
जिन मुनि अने श्रुत सिद्धा करवा चारेने वंदना.

चार प्रकारे जिनेश्वरो

नाम स्थापना द्रव्यने भाव चारे प्रकारना जिनेश्वरो छे,
सम्यग् देवता माटे जणाय ए स्मरण करवा योग्य छे. ५०

चार प्रकारना जिनेश्वरोनुं स्वरूप

प्रभुनुं नाम नाम जिन छे प्रभु प्रतिमा स्थापना जिन छे,
प्रभुनो आत्मा द्रव्य जिन छे समवसरण भाव जिन छे. ५१

चार स्तुतिओ

चार स्तुतिमां एक मुख्य जिननी बीजी सर्व जिननी जणाय,
त्रीजी ज्ञानननी चोथी देवनी एम स्तुतिनी रचना कराय. ५२

आठ निमित्त, बार हेतु, सोळ आगार, १९ दोष

सत्तर द्वारे छे आठ निमित्तो कायोत्सर्ग बार कारणे कराय,
कायोत्सर्गे बार सोळ आगार ओगणीश दोषो ग्रन्थे जणाय.

काउसग्ग प्रमाण, स्तवन

एकवीश द्वारे पचीस श्वासोश्वास कायोत्सर्गनुं माप गणाय,
गंभीर मधुरे स्तवन गाता बावीश द्वार अहीं पूर्ण जणाय. ५३-५८

सात चैत्यवंदन

त्रेवीश द्वारे सात चैत्यवंदन गृहस्थने पण जणाव्युं छे,
जघन्ये त्रण चैत्यवंदन त्रिकाल पूजाने गणाव्यु छे.

दश आशातना

चोवीशमा द्वारे दश आशातना टाळो तमे जिनमंदिरमां,
देववंदन करो मोक्षने पामो देवेन्द्रसूरि कहे मनमंदिरमां. ५९-६०

आर्यरक्षितसूरि सित्तेर बोलमां आगम अनुसारे निषेध जाणो,
फळ नैवेद्य दिपक पूजाने तथा अष्टप्रकारीने न गणो.
निस्सिही प्रदक्षिणा संपदाने त्रिकने न गणवा कहे छे,
संशोधनना विषयो आ बधा अभ्यास मांगी लेता जणाय छे.

कळश

चैत्य स्तवने संक्षिप्ते रच्युं तलासरीना मल्लिधाममां,
वीरचंद नरशी परिवारे भक्ति करी खूब आनंदमां.
आर्य कल्याण गौतम गुणसूरि गुरुदेवोनी कृपा जणाय छे,
बे हजार बांसठे रचना सर्वोदयथी कराय छे.

इति चैत्यवंदन भाष्यनो गुर्जर भाषामय पद्यानुवाद संपूर्ण

गुरुवंदन भाष्य - पद्यानुवाद

रचयिता

पूज्य श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म.सा.

गुरुवंदन भाष्य - पद्यानुवाद

(राग- हरिगीत)

वंदनना प्रकार

नमुं वीरने गोयम गुरु जेवा श्री गुणसूरिने नमन करुं,
देवेन्द्रसूरिना गुरु भाष्यने संक्षिप्तमां गुर्जर पद्ये रचुं.
फेटा छोभ द्वादशावर्त वंदन त्रण प्रकारोथी कराय छे,
अंजलिबद्धने फेटा वंदन बे खमासणे छोभ थाय छे. १-२
धर्मनुं मूळ विनयने जाणो बे वांदणाथी द्वादशा थाय छे, ३-४
वंदन चिति कृति पूजा जाणो विनय गुरुवंदन थाय छे.
कोने करवुं कोणे करवुं ए नवद्वारोथी समजावशे, ५-६
वंदन दृष्टांत योग्य अयोग्य बावीश मूळ द्वार बतावशे. ७-८
दाता अदाता निषेध अनिषेध कारण आवश्यक पडिलेण छे,
दोष गुण स्थापना अवग्रह अक्षर पद स्थान वचन छे.
तेत्रीश आशातना विधि जाणो चारसो बाणुं पेटा भेद छे, ९
विस्तार एनो ग्रन्थथी जाणो वंदन ए नरकनो छेद छे.

गुरुवंदनना पांच नाम

प्रशस्त स्तवना वंदन कर्म रजोहरणे छे चितिकर्म,
मोक्षार्थे नमन जाणो कृतिकर्म प्रशस्त व्यापार पूजाकर्म.
कर्मनो विनाश विनयकर्म दरेके बे बे भेद जणाय छे, १०
शीतलाचार्यादि पांच दृष्टांत हवे ग्रन्थमां एने भणाय छे. ११

अवंदनीय

त्रीजु द्वार अवंदनीय साधु पासत्था अवसन्न कुशील छे,
संसक्त अने यथाछंद भेदो बे बे त्रण बे अनेक छे.
फक्त वेषधारी पासत्थ जाणो शिथिलाचारी अवसन्न छे,
माठा आचारवाळो कुशील जाणो गुण दोष संयुक्त संसक्त छे. १२
उत्सूत्र प्ररूपी यथाछंदी छे चोथुं द्वार हवे कहेवाय छे,
आचार्य उपाध्याय प्रवर्तक स्थविर रत्नादिक वंदाय छे. १३

अवंदनीय, वंदन करवाना अनवसर

माता पिता अने जेष्ठ भ्राता लघुवये रत्नादिक न वंदाय, १४
व्यग्रचित्त पराङ्मुखी प्रमादे आहार निहार पांचे न वंदाय. १५
वंदन करवाना अवसर, वंदन करवाना निमित्तो
प्रशांत उपशान्तादि गुरुने आज्ञा मागीने वंदन कराय, १६

प्रतिक्रमण स्वाध्यायादि माटे कारणे गुरुने वंदन कराय. १७

द्वादशावर्त वंदनना आवश्यको पच्चीश

दशमा द्वारे पच्चीश आवश्यक द्वादशा वंदने जणाय छे, १८

पच्चीश आवश्यके एक विराधे कर्म निर्जरा न जणाय छे. १९

मुहपत्तिनी पडिलेहणा

मुहपत्तिनी पच्चीश लेखना अग्यारमा द्वारमां कहेवाय छे,

एक दृष्टि नव प्रमार्जना छ परफोडा नव अखोडा छे. २०

शरीरनी पडिलेहणा

शरीरनी पच्चीश पडिलेणा बारमा द्वारे जणावाई छे,

पुरुषो पच्चीश स्त्री पंदर करे एम ग्रन्थे गणावाई छे. २१

कर्म निर्जराए विधि करवी बत्रीश दोषोने त्यजाय छे, २२-२५

निर्वाण पामे के वैमानिके जाय वंदने छ गुण गमाय छे.२६-२७

गुरुनी स्थापना

गुरु विरहे गुरुवंदन करो अक्ष पुस्तक चित्र मूर्तिमां, २८-२९

गुरु विरहे सामायिके स्थापो स्थापनाचार्य गुरुभक्तिमां. ३०

अवग्रह - वंदनसूत्रना

साडात्रण हाथ अवग्रह जाणो विरुद्ध तेर हाथ जणाय छे, ३१

बस्सो छव्वीस अक्षर जाणो बस्सो एक लघु जणाय छे. ३२

शिष्यना ६, गुरुना ६ स्थान, ३३ आशातना

ओगणीशमा द्वारमां शिष्यना छ स्थान वंदन जणाय छे, ३३

गुरुना छ स्थान वंदन जाणो तेत्रीश आशातना टळाय छे. ३४-३७

पग लगाडवो ते जघन्य छे थुंकादि मध्यम छे आशातना,

आज्ञाथी विरुद्ध आचरण उत्कृष्ट गुरुनी छे आशातना.

श्राद्धविधि वृत्तिमां जणाय छे विस्तार ग्रन्थथी जाणी लीओ, ३८

बावीस द्वारे गुरुवंदनने लघु प्रतिक्रमण जाणी लीओ. ३९

उपसंहार, फळ

आ प्रमाणे गुरुवंदना रची मोक्ष मेळववा माटे आ,

तलासरी तीर्थे मल्लि सानिध्ये बे हजार बांसठे रचना आ.

एन. एन. सन्से आर्य कल्याण कृपा मळी गौतम गुणसूरि,

प्रभु कृपाए सरल रचना सर्वोदयथी गुणभरि.

इति गुरुवंदन भाष्यनो गुर्जर भाषामय पद्यानुवाद संपूर्ण

पच्चक्खाण भाष्य - पद्यानुवाद

रचयिता

पूज्य श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म.सा.

पच्चक्खाण भाष्य - पद्यानुवाद

नमुं वीरने गोयम गुरु जेवा श्री गुणसूरिने वंदन करुं,
देवेन्द्रसूरि रचित पच्चक्खाण भाष्यने गुर्जर पद्ये रचुं.
पच्चक्खाण विधि आहार आगार विगई निवियाता बे भांगा छे,
छ शुद्धि बे फळ नव प्रकारे थाय नेवु उत्तर भांगा छे. १

दश पच्चक्खाण

अनागत अतिक्रान्तने कोटि नियन्त्रित अनागार सागार छे,
निरवशेष परिमाणकृतने संकेत अद्धा दश प्रकारे छे. २

दश काळ पच्चक्खाण

नवकारशी पोरिसी पुरिमड्ढ एकाशन एकलठाणुं छे,
आयंबिल उपवास चोविहार अभिग्रह विगई दस अद्धा छे. ३

उच्चार

मध्याह्न पहेलाना उग्गए सूरे पछी सूरे उग्गए बोलाय छे,
अचलगच्छमां बधा पच्चक्खाण फक्त सूरे उग्गए बोलाय छे. ४
पाठ स्खलना थाय छतां पण धारेलुं पच्चक्खाण प्रमाण छे, ५
उच्चार स्थाने तेर त्रण त्रण एक एक एकवीश थाय छे. ६

नवकारशी आदि तेर पहेला बीजा स्थाने आयंबिलादि त्रण,
एकासणादि त्रण त्रीजा स्थाने एक एक पाणने देशाव जाण. ७
आठथी बार गाथा मूले जाणो दुविहार सुधीनी वात कराय,
अचलगच्छमां न मान्यता ए धार्या प्रमाणे पच्चक्खाण अपाय. ८-१२

चार प्रकारना आहार

चार प्रकारनो आहार बतावे अशन पाण खादिम स्वादिम, १३
आठ विभागे अशन जाणो पाणमां गरम पाणी वपराय. १४
फळ शेकेला धान्य खादिम जाणो
मुखवासादि स्वादिम गणाय, १५
चारे आहारनो विस्तार जाणो मूल ग्रन्थथी ए भणाय.

पच्चक्खाणमां आगार भेद

बार पच्चक्खाणे बावीस आगार नीचेना स्थाने ए जाणी लीओ,
नवकारशी बे साढपोरिसी छ पुरिमड्ढ
अवड्ढे सात आगारीओ.
एकासण बिआसणे आठ छे एकलठाणे छे सात आगार,
नीविमां नव आयंबिले आठ ग्रन्थे
जाणी लीओ कया कया आगार १६-२०

आचार भेद

उपवासे पांच पाणीना छ संकेतादि पच्चक्खाणे चार छे,
बावीसमी मद्य मांसनी छे अठ्यावीस सुधी आगारनी छे.
एकवीस भक्ष्य बार अभक्ष्य विगईओ ग्रन्थे गणावी छे,
संक्षेपमां त्रीस नीवियाने पांत्रीश गाथामां जणावी छे. २१-२९

दश विगई - पांच निवियातां

दुधना पांच खीर पेयादि घीना पांच निर्भजनादि छे,
दहींना पांच करंब घोलादि तेलना पांच पक्व तेलादि छे.
गोळना पांच पाक गुडादि पक्वान पांच गुड धाणी जाणो,
बीजा पण अनेक निवियाता
अन्य ग्रन्थोमांथी तमे जाणो. ३०-३५

संसृष्ट द्रव्य

संसृष्ट द्रव्य सात कल्पे छे गिहत्थ संसट्ठेणं आगारमां,
पकवान काढेला घीने कहे 'उत्कृष्ट द्रव्य' चाले निवियातामां.

सरसोत्तम द्रव्य

तलसांकळी मेवादि रायण आंबो द्राक्ष पानादि डोळीया,
तेल वि. सरसोत्तम द्रव्यो लेपकृत कारणे निवियाता. ३६-३८

पच्चक्खाणनी चतुर्भंगी

विकृति रहित विगईओ कारण विना खावा कल्प नहि,
विगईथी दुर्गतिमां जाय संयमभ्रष्ट थवुं कल्पे नहि.
बेंतालीस सुधीनी गाथामां मधादि भांगा साथे जणावी छे,
पच्चक्खाणनी चतुर्भंगी जाणो चोथो अशुद्धने त्यजाय छे. ३९-४३

पच्चक्खाणनी ६ शुद्धि

दिवस उग्या पहेला लीधेलुं ते स्पर्शित पच्चक्खाण कहे छे,
लीधेलाने वारंवार संभार्युं ते पालित पच्चक्खाण कहे छे.
गुरुने आपता शेष वध्युं ते शोधित पच्चक्खाण कहे छे,
काळ वित्या बाद पाळवानुं ते तीरित पच्चक्खाण कहे छे. ४४-४५
भोजन समये संभाळवाथी ते कीर्तित पच्चक्खाण कहे छे
पूर्वोक्त रीतिए आदरेलुं ते आराधित पच्चक्खाण कहे छे
बीजी रीते श्रद्धा अने ज्ञान विनय अनुभाषण शुद्धि छे
अनुपालन भावशुद्धि एम छ प्रकारनी ए शुद्धि छे ४६

बे फळ

पच्चक्खाणना बे फळ कह्या छे आ लोकनुं दृष्टांत धम्मिल छे
परलोकनुं दामनक दृष्टांत पच्चक्खाण सेवी मोक्षे जवानुं छे ४७-४८

तलासरी तीर्थे मल्लिधाममां एन. एन. सन्से करी रचना
प्रभु कृपाए सौनो सर्वोदय त्रण भाष्यनी जे करे अर्चना.

इति पच्चक्खाण भाष्यनो पद्यानुवाद संपूर्ण

कर्मविपाक कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद

रचयिता

पूज्य श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म.सा.

कर्मविपाक कर्मग्रंथनो पद्यानुवाद

मंगलाचरण

नमुं वीरने गोयम गुरु जेवा गुणसूरिने वंदन करुं,
देवेन्द्रसूरि रचित कर्मविपाक गुर्जर पद्ये रचुं
जीव वडे हेतुथी जे कराय तेने कर्म कहेवाय छे
विपाकनो अर्थ अनुभव करवो एम कराय छे १

कर्मना चार भेद

कर्म प्रकृति स्थिति रस अने प्रदेश चार प्रकार छे
लाडवाना प्रकारे जाणो ते वात-पित्त-कफ हरे छे
जे मूल प्रकृति कर्मनी शास्त्रकारे आठ बतावी छे
उत्तर प्रकृतिओ एकसो अट्ठावन भेदे जणावी छे २

आठ कर्मना नाम - भेद कहे छे

ज्ञान अने दर्शना वरणीय वेदनीय मोहराय छे
आयुष्य नाम गोत्र अंतराय आठ भेदे कर्मो थाय छे
पांच नव बे अट्ठावीस अने चार एकसो त्रण भेद छे
गोत्रना बे अंतराय पांच कुल एकसो अट्ठावन छे ३

ज्ञानना भेद - मतिज्ञान

मति श्रुत अवधि मनःपर्यय केवलज्ञान पांच भेद छे
स्पर्श रस घ्राण श्रोत्रेन्द्रिय व्यंजनावग्रह मतिज्ञान छे
मन अने चक्षुरिन्द्रियने अप्राप्यकारी गणावाया छे
मतिज्ञानने आगममां आभिनिबोधिक जणावाया छे ४

मतिज्ञान - श्रुतज्ञानना भेद

अर्थावग्रह ईहा अपाय धारणा ६ भेदे मतिज्ञान छे
छ ने गुणतां चोवीश भेद कुल अठ्यावीश जणाय छे
मतिज्ञानना बत्रीश भेद कुल (अठ्यावीश)
त्रणसो चालीश लखाय छे
श्रुतज्ञानना चौद भेदो अथवा वीस भेदो थाय छे ५

श्रुतज्ञानना भेद

अक्षर सन्नी सम्यक् सादिने सपर्यवसित श्रुत छ
गमिक अंगप्रविष्ट थयां प्रतिपक्षे चौद भेद थाय छे
हंस आदि अढार लिपि संज्ञाक्षर आदि त्रण भेद छे
अंगप्रविष्ट ने अंगबाह्यने श्रुतज्ञान कहेवाय छे ६

श्रुतज्ञानना भेद

बीजा श्रुतज्ञानना वीस भेदो अनुक्रमे गणावाय छे
पर्याय अक्षर पद संघात प्रतिपत्ति पांच थाय छे
अनुयोग प्राभृत प्राभृत वस्तु पूर्व गवाय छे
समास सहित दरेक गणतां वीस भेदो जणाय छे ७

अवधि - मनःपर्यव - केवल ज्ञान भेद

हवे अवधिज्ञानना छ भेदो अनुगामी वर्धमान छे
प्रतिपाति त्रणने विरुद्ध गणता छ भेदे प्रकाशमान छे
भव-गुण प्रत्ययिकने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव मान छे
ऋजु-विपुलमति चोथा भेदे एक ज केवलज्ञान छे ८

ज्ञान दर्शन विवरण

पांचे ज्ञाननुं आवरण जाणो आंखे बांधेल पडल छे
द्वारपाल जेवुं दर्शनावरणीय नव भेदे ए अटल छे
चक्षु अचक्षु अवधिदर्शन केवलदर्शन चार छे
सामान्य बोधवाळा होवाथी तेथी ते कर्मोना सार छे ९-१०

दर्शनावरण - निद्राना प्रकार

सुखेथी जगाडी शकाय ते निद्रानो प्रकार गणाय छे

बहु कष्टे जागी शकाय तेने निद्रा निद्रा जणाय छे
उभां अने बेठा उंघे तेने प्रचला नामे ओळखाय छे
चालतां चालतां उंघे तेने प्रचला प्रचला कहेवाय छे ११

दर्शन - वेदनीय कर्म विपाक

दिवसे चिंतवेलुं कार्य रात्रे निद्राना काळमां करे छे
थिणद्धि निद्राने जाणजो बळदेवना बळवाळी छे
आ बळ प्रथम संघयणे वर्तमाने आठ गणुं बळ छे
मधु लिपी असि धार चारो ए वेदनीय बे प्रकारे छे १२

वेदनीय - मोहनीय

बहुलताए मनुष्य देवने शाता वेदनीय होय छे
नारकी तिर्यंचो अशाता वेदनीयथी पीडाय छे
मोहनीय कर्म मदिरा जेवुं ए भान भुलावे दरेकने
दर्शन-चारित्र-मोहनीय ए मुख्य भेद जुओ बे पणे १३

दर्शन मोहनीय भेद

दर्शन मोहनीय प्रकारो सम्यक्त्व मिश्र मिथ्यात्व छे
शुद्ध दलिकवाळुं सम्यक्त्व मोहनीय कहेवाय छे
अर्ध शुद्ध दलिक वेदनवाळु मिश्र मोहनीय होय छे

अशुद्ध दलिक वेदनवाळु मिथ्यात्व मोहने जोवाय छे १४
जीव अजीवने पुण्य पाप आश्रव संवर निर्जरा
बंध मोक्ष ए नव तत्त्वोनी भावे करे छे सद्दहणा
क्षायिकादि घणा भेदोवाळुं तेहने सम्यक्त्व होय छे
क्षयोपशमने उपशम सास्वादन वेदक जोय छे १५
मिश्र मोहनीय उदये एने जिनधर्मे राग-द्वेष न होय
एक अंतरमुहूर्त जाणजो नालिकेर द्वीपे मनुष्यो जोय
मिथ्यात्व मोहनीय उदये विपरीत बुद्धि थाय छे
राग द्वेष मोहादि दोषोथी एने स्त्रीमां स्वर्ग देखाय छे १६

चारित्र मोहनीय भेद

चारित्र मोहनीय बे भेदे कषाय नोकषाय जाणजो
अनंत-अप्रत्या-प्रत्याख्यानीय संज्वलने ते प्रमाणजो
क्रोध मान माया लोभ चार चार भेदे सोळ थाय छे
नव नोकषाय चारित्रना कुल भेद पच्चीश जणाय छे १७

क्रोध

कषायनुं काळ मान कहे अनंतानुबंधि यावज्जीव
अप्रत्याख्यानीय वरस छे एम कहे छे सर्वज्ञ देव

प्रत्याख्यानीय कषायनुं चार मास काळने जाणजो
संज्वलन कषाय पंदर दिवस मनमां ए धारजो १८

मान - माया - लोभ

पाणीनी रेखा रेतीनी रेखा पृथ्वी पर्वतनी छे क्रोधनी
नेतरनी काष्ट हाडकानी सोटी पथ्थरनी छे माननी
लाकडाना छोडा गौमुत्रने मेषना शिंगडा वांसमूळ
माया लोभ हळदर काजळ गाडा मळी कीरमजी कूळ १९-२०

नव नोकषाय

नव नोकषाय मोहनीय हास्य रति अरति शोक छे
भय जुगुप्सा पुरुषवेद स्त्रीवेद नपुंसक नव छे
पुरुषनो अभिलाष स्त्रीवेद विपरीत पुरुषवेद छे
उभय नपुंसकने जाणो लींडा तृण नगर दाह छे २१-२२

आयु - नाम

नरक तिर्यंच मनुष्य देव बेडी सरखुं आयुष्य छे
नामकर्म चित्रकार जेवुं चार प्रकारो कहेवाय छे
बेंतालीस सडसठने त्राणुं एकसो त्रण नाम जाणजो
पिंड प्रत्येक त्रस दशक स्थावर दशक प्रमाणजो २३

नामकर्म

गति जाति शरीर अंगोपांग बंधन संघातन संघयण
संस्थान वर्ण गंध रस स्पर्श आनुपूर्वी विहाय पिंड जाण
पराघात उच्छ्‌वास आतप उद्योत अगुरुलघु छे
जिननाम निर्माण उपघात प्रत्येकना आठ भेद छे २४-२५
त्रस बादर पर्याप्त प्रत्येक स्थिर सुभग शुभ सुस्वर
आदेय नाम त्रशदशक छे स्थावर सूक्ष्म अपर्याप्त
साधारण अस्थिर अशुभ दुर्भग दुस्वर अनादेय
अयश नाम स्थावरदशक, बेतालीश भेद गणाय छे २६-२७
त्रस चतुष्क स्थिर षष्ठ अस्थिर षष्ठने सूक्ष्म त्रिक
स्थावर चतुष्क सुभग त्रिक प्ररूपणा छे विभास जिम
चौद पिंड प्रकृतिना भेदो चार पांच पांच त्रण पांच
पांच छ छ पांच बे पांच आठ चार भेद एम जांच २८-२९
पांसठमां अठ्यावीस गणता त्राणुं प्रकृति सत्तामां जाणो
बंधनना पांचने बदले एकसो त्रण माटे पंदर गणो
बंधन संघातन शरीरे वर्णादि चारने गणाय छे
सडसठ भेद नाम कर्मना, कर्मग्रन्थमां जणाय छे ३०-३२

नरक तिर्यंच मनुष्य देव ए चार गति गणाय छे
एकेन्द्रियथी पंचेन्द्रियने पांच जातिमां जणाय छे
औदारिक वैक्रिय शरीर आहारक तैजस शरीर छे
कार्मणने पांचमुं गणता पांच शरीर बतावाय छे ३३
बे भुजा पीठ मस्तक छाती बे साथळ पेट आठ अंग छे
उपांगमां आंगळीने जाणो वेढा रेखा अंगोपांग छे
बंधायेलाने बंधाता कर्मो औदारिक पुद्‌गलो जाणजो
लाखनी जेम चोटता ए कर्मोने तोडवा विचारजो ३४
जे औदारिक शरीर पुद्‌गल पिंडभूत संघात रूप छे
संघातन नामकर्म जाणो चारे शरीरो भरपुर छे
औदारिक अने वैक्रिय आहारकने तैजस जोडता
कार्मण नव त्रण त्रण जाणो पंदर बंधनने तोडता ३५-३७
हाडकानी रचनाने जाणो जे वज्र ऋषभ नाराच छे
ऋषभ नाराच अने नाराच अर्ध नाराच ए चोथुं छे
कीलिका छेवट्‌ठु संघयण ऋषभनो अर्थ पाटो छे
कीलिका-खीलो-नाराच मर्कट जेनो मां साथे नातो छे ३८-३९
समचतुरस्त्र न्यग्रोध सादि कुब्ज वामन हुंडक जाणो

पांच वर्णोमां कृष्ण नील लाल पीत श्वेतने वखाणो
सुरभि दुरभि बे गंध जाणो मधुरादि पांच रसो छे
गुरु लघु मृदुने खर, शीत-उष्णादि आठ स्पर्शो छे ४०-४१
नील कृष्ण दुर्गंध तिक्त कटु गुरु कर्कश रूक्ष
शीतादि नव अशुभ जाणो अग्यार शास्त्रे शुभ छे दक्ष
गति आनुपूर्वी चार जाणो द्विक-त्रिक आयु साथे गणो
शुभ अशुभ विहायोगति आनुपूर्वी गति तेवी जाणो ४२-४३

नामकर्म

पराघात उदयथी क्षोभ थाय श्वासोश्वास नामे श्वास लेवाय
आतपे तडको उष्ण उदये उद्योत नामकर्म जोवाय
ज्योतिषिओ खजवाने तारा एमने उदयमां आवे छे
अगुरुलघु हलको न भारे तीर्थंकर सर्वत्र पूजाय छे ४४-४७
अंगोपांग रचना निर्माण जाणो उपघाते दुखी थाय छे
हालता चालता त्रस जीवो स्थिर तो बादर जणाय छे
पर्याप्तिओ जे पूर्ण करे ते पर्याप्ता कहेवाय छे
नामकर्मना भेदोनुं अहीं सुंदर वर्णन कराय छे
एक शरीरे एक जीवने प्रत्येक नाम कहेवाय छे

स्थिर नामे हाडकाने जाणो मस्तक उन्नत रखाय छे
नाभिथी उपरना भागने शुभ नामकर्म उदय जाणो
सर्व जनोने प्रिय थाय ते ए सुभग नाम अनुमानो
मधुर स्वर सुस्वर जाणो आदेय सर्वने ग्राह्य होय
यशनामथी कीर्ति व्यापे स्थावर दशक भिन्न जोय ४८-५१

गोत्र कर्म

गोत्र कर्म कुंभार जेवुं छे उच्च नीच बे भेद जणाय छे
दान लाभ भोग उपभोग वीर्यान्तराय पांच गणाय छे ५२

अंतराय कर्म, आठ कर्मबंधना कारण

लक्ष्मीना भंडारी जेवुं अंतराय कर्म जणाय छे ५३
प्रत्यनीक निह्नवपणुं ज्ञान ज्ञानी नाश कराय छे
ज्ञानावरणीय कर्म बांधे दर्शन दर्शनावरणी जाणो
दर्शननी अत्यंत आशातना न भक्त पान वसति गणो ५४
गुरु भक्ति क्षमा करुणाने व्रत योग कषायविजय छे
दृढ धर्मीपणुं सरलताथी शाता वेदनीय बंधाय छे
विपरीतथी अशाता थाय उन्मार्ग देशना मार्गे नाश
देवद्रव्यहरण चैत्यनाश मोहनीय कर्मनो मळे त्रास ५५-५६

कषाय हास्यादि विषयोमां आसक्त चारित्र मोहनीय छे
महा आरंभ महा परिग्रह रौद्र ध्याने नरकायु जणाय छे
शठ शल्य गुढ हृदयथी तिर्यंचायु बंध कराय छे
अल्प कषायी दान रूचि मध्यम गुणो मनुष्ये जाय छे ५७-५८
अविरत बाल तपस्वी अकाम निर्जरा देवायु छे
सरलने गारवरहित शुभ नाम बाकी अशुभ छे
गुणग्राहीने मद रहित भणवा के भणावामां छे
जिन भक्त उच्च गोत्रे छे विपरीतथी नीच गोत्र छे ५९-६०
जिन पूजामां विघ्नकारी अढारे पापोमां आसक्त छे
अंतराय कर्मनें बांधे एम देवेन्द्रसूरि कहे छे ६१

उपसंहार

मतिचंद्रने नरवाहन लखी आधार लई रचना करी
तलासरीमां मल्लिनाथना मुनि सर्वोदये गुण लही

इति कर्मविपाक कर्मग्रंथनो पद्यानुवाद संपूर्ण

कर्मस्तव कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद

रचयिता

पूज्य श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म.सा.

कर्मस्तव कर्मग्रंथनो पद्यानुवाद

मंगलाचरण

नमुं वीरने गोयम गुरु जेवा गुणसूरिने वंदन करुं
देवेन्द्रसूरि रचित कर्मस्तवने गुर्जर पद्ये रचुं
गुणस्थानकमां रहीने बंध उदय उदीरणा सत्ता
सकल कर्मोने खपाव्या मने बुद्धि आपो गुणवत्ता १

१४ गुणस्थानक

मिथ्यात्व सास्वादन मिश्रने अविरतिने देशविरति छे
सर्वविरति अप्रमत्तने निवृत्ति-अनिवृत्ति करण छे
सूक्ष्म संपराय उपशांत क्षीणमोह सयोगी केवली छे
अयोगी केवली - गुणस्थानो चौद क्रमथी गणाय छे २

१४ गुणस्थानके बंध

नवा कर्मो जे ग्रहे तेने शास्त्रकारो बंध कहे छे
ओघमां प्रकृति ए जणावे एकसोवीश ग्रन्थे भणे छे
जिन नाम आहारक द्विक एकसो सत्तर गणाय छे
प्रथम गुणस्थानके जाणो विवेचन एनुं कराय छे

ज्ञान पांचने दर्शन नव बे वेदनीय तमे जाणजो
छवीस मोह आयु चार सडसठ नामना गणायजो
गोत्र बे अंतराय पांच बंधमां ओघनी प्रकृतिओ
क्रमथी गणतां एकसोवीश विस्तार एनो जाणी लीओ ३

सास्वादन गुणस्थानक

नरक त्रिक जाति चतुष्क स्थावर चतुष्क हुंडक छे
आतप छेवट्ठु नपुंसकने मिथ्यात्व सोळनो अंत छे
एकसो एक सास्वादने मिश्रे चुमोतेर बंधाय छे
तिर्यंच त्रिक थीणद्धि त्रिक दुर्भग त्रिक अंत थाय छे ४
अनंतानुबंधी चार कषाय चार संस्थान संघयण छे
नीच गोत्र उद्योत जाणो अशुभ विहायोगति छे
ए पच्चीशनो अंत थाता बे आयुष्यनो अबंध छे
त्रीजु गुणस्थानक मिश्रमां चुमोतेर कर्मो बंधाय छे ५

समकित गुणस्थानक

जिन नाम बे आयुष्य थातां सम्यक्त्वे सित्तोतेर बंधाय छे
वज्रऋषभने नरत्रिक अप्रत्याख्यानीय कषाय छे
औदारिक द्विक अंत थाता देशविरतिए सडसठ छे
पांचमां गुणस्थान अंते त्रीजो कषाय ए तो जाय छे ६

प्रमत्त गुणस्थानक

प्रमत्तमां त्रेषठ बंधाय अरति अस्थिर द्विक शोक छे
अयश अशाता छ ने जाणो देवायु माटे विकल्प छे ७

अप्रमत्त गुणस्थानक

अप्रमत्ते छे ओगणसाठ आहार द्विके अट्ठावन छे
सात गुणस्थानक थया हवे आठमुं कहेवाय छे ८

निवृत्ति गुणस्थानक

अपूर्वकरणना त्रण भागे पहेले अट्ठावन जाणो
निद्रा द्विकनो अंत थाता बे थी छ भागे छप्पन माणो
त्रीश प्रकृतिनो अंत थाता सातमा भागे छव्वीस बंधाय
हास्य रति भय जुगुप्सा अंते चारनो अंत जणाय ९-१०

अनिवृत्ति गुणस्थानक - सूक्ष्म संपराय

अनिवृत्तिना पांच भागमां पहेले बावीस बंधाय छे
एक एक घटता पांच जाता सूक्ष्मे सत्तर बंध थाय छे

११-१२-१३-१४ गुणस्थानक

दसमा गुण अंते सोळ जाता त्रणमां शाता बंध थाय छे
चौदमां अबंधक होता जल्दी मोक्षे पहोंचाय छे ११-१२

उदय

बंध पूर्ण थाता उदयने उदीरणाने कहेवाय छे
विपाकथी भोगवे उदय जाणो उदीरणाए पराणे खेंचाय छे
एकसो बावीस प्रकृति कहे मिथ्यात्वे एकसो सत्तर छे
मिश्र सम्यक् आहारक द्विक जिननामनो अनुदय छे १३
सास्वादने ते एकसो अग्यार त्रीजा मिश्रे सो'ने जाणोजी
सम्यक्त्वे एकसो चार उदये शास्त्रनी वात प्रमाणोजी १४-१५
देशविरते सत्यासी जाणो प्रमत्ते एक्याशी उदये छे
अप्रमत्ते छहुंतेर जाणो विस्तार ग्रंथमां जोय छे १६-१७
सम्यक्त्व मोह त्रण संघयणो अपूर्वकरणे बोंतेर छे
हास्यादि छ नो अंत थाता अनिवृत्तिए छासठ छे १८
संज्वलन त्रिकनो अंत थाता सूक्ष्म संपराये साठ छे
संज्वलन लोभनो अंत थाता अग्यारमो उपशांत मोह छे १९
क्षीण मोह उपान्त्ये रहे सत्तावन अंते पंचावन छे
चौद प्रकृतिनो अंत थये सयोगी बेंतालीश रहे छे
सयोगीए बार उदय होय चरमे सर्व अंत थाय छे
जीव सिद्धिगतिने पामे उदय पूर्ण जणाय छे २०-२२

उदीरणा

छ गुणस्थानक सुधी तो उदयने उदीरणा एक छे
सातमे त्रउंतेर प्रकृति छे आठमे ओगणसीत्तेर छे
नवमे त्रेसठ दसे सत्तावन अग्यारे छप्पन बारे बावन
तेरमे ओगणचालीश जाणो अयोगीए नही प्रकृति धन्न २३-२४

सत्ता

कर्मोना पुद्गलो आत्म प्रदेशे स्थिर रहे सत्ता कहेवाय
एकथी अग्यारे विकल्पे एक सो अडतालीस देखाय
बीजे त्रीजे जिननाम विना एकसो सुडतालीस होय छे
चोथेथी साते एकसो एकतालीस
अपूर्व चारे एकसो बेतालीश २५-२६
चोथेथी साते क्षपक जीवोने एकसो पिस्तालीस होय छे
चोथेथी नवना एक भागे एकसो आडत्रीस जोय छे
नवमा गुणे बीजा भागे एकसो बावीस होय छे
त्रीजा भागे एकसो चौद चोथा भागे एकसो तेर छे २७-२८
पांचमे एकसो बार जाणो छट्ठे भागे एकसो छ वखाणो
सातमे भागे एकसो पांच आठमे भागे एकसो चार छे

नवमे भागे एक सो त्रण दशम गुणे एकसो बे छे
क्षीण मोह उपान्त्ये एकसो एक अंते नव्वाणुं प्रकृति छे २९-३०
सयोगी केवलीए प्रकृति पंच्याशी ग्रन्थमां जणाई छे
अयोगी उपान्त्ये त्रौतेर विकल्पे बोतेर जाय छे
तेर प्रकृति सत्तामां होय मनुष्य त्रिक आदेय यश
त्रस त्रिक उच्च गोत्र सुभग जिननाम पंचेन्द्रि वेदनी तस ३१-३३
मनुष्यानुपूर्वी विना सत्तामां बार प्रकृति पण जणावी छे
देवेन्द्रसूरिए कर्मस्तवमां आ रीते पण गणावी छे ३४
मल्लिनाथ छत्र छाया लई तलासरीमां करी गणना
एन. एन. सन्से स्थिरता थई एक दिवसमां थई रचना

इति कर्मस्तव कर्मग्रंथ पद्यानुवाद संपूर्ण

बंधस्वामित्व कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद

रचयिता

पूज्य श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म.सा.

बंधस्वामित्व कर्मग्रन्थनो पद्यानुवाद

मंगलाचरण

नमुं वीरने गोयम गुरु जेवा गुणसूरिने वंदन करुं
देवेन्द्रसूरि रचित कर्म बंधने गुर्जर पद्ये रचुं
गति आदि मार्गणाओने कर्मग्रन्थमां कहेवाय छे
त्रीजो कर्मग्रन्थ बंधस्वामित्व ए नामथी ओळखाय छे १

६२ मार्गणा

गति इंद्रिय काय योग वेद कषाय ज्ञान संयम दर्शन
लेश्या भव्य सम्यक्त्व सन्नी आहारी मार्गणा ए चौद घन
चार पांच छ त्रण त्रण चार आठ चार छ बे भेद छे
(सम्यक्त्वना छ सन्नीना बे आहारी मार्गणा बे)
छे बे बे चौद मार्गणाना जुओ कुल बासठ भेद छे २
जिननाम देवद्विक वैक्रियद्विक आहारकद्विक देवायुष्य
नरकत्रिक अने सूक्ष्मत्रिक विकलत्रिक एकेन्द्रिय स्थावरस्य
आतप नपुंसक वेद मिथ्यात्व हुंडकने छेवठ्ठु संघयण
अनंतानुबंधि संघयण संस्थान मध्यम चार चार गण ३

अशुभ विहायोगति स्त्रीवेद नीच गोत्रने दुर्भग थिणद्धि त्रिक
उद्योत अने तिर्यंच द्विक तिर्यंच आयुष्य मनुष्य द्विक
मनुष्यायुष्य औदारिक द्विक वज्रऋषभ छे संघयण
कुल पंचावन प्रकृतिओमां (विभासा) संज्ञाओ प्राप्त गण ४
प्रथम त्रण नरक ओघमां एकसो एक प्रकृति होय छे
एकसो वीसमांथी देवगति ओगणीस प्रकृति वर्जाय छे
जिननाम कर्म विना मिथ्यात्वे बंधमां सो प्रकृति होय छे
बीजा गुणे नपुंसक चतुष्क विना छन्नु प्रकृति होय छे ५
अनंतानुबंधी छव्वीस विना त्रीजा गुणे सित्तेर बंध छे
जिन नाम नरायु उमेरता चोथा गुणे बोतेर बंध छे
जिन नाम विना पंकादि त्रण एकोतेर प्रकृति बंधाय छे
पंकादि त्रणमां ओघे प्रकृति एकसो बाकी सरखी थाय छे ६
सातमी नारके ओघमा नव्वाणु प्रकृति बंधाय छे
मिथ्यात्वे छन्नु बंधायने सास्वादने एकाणुं होय छे
जिन नाम मनुष्यायु न ओघे न उच्च गोत्र मनुष्यद्विक
बीजे न नपुंसक चतुष्क अने तिर्यंच आयुष्य त्रिक ७
मिश्र अविरति गुणठाणे सित्तेर प्रकृतिओ होय छे

अनन्तानुबंधि चोविश विना मनुष्य द्विक उच्च गोत्र होय छे
पर्याप्ता तिर्यंच हवे जाणो ओघे मिथ्यात्वे एकसो सत्तर छे
आहारक द्विक न होय जिन नामनो पण कटर छे ८
नरकादि सोळनो अंत थाता एकसो एक प्रकृति बंधाय
अनंतानुबंधी एकत्रीश जाता ओगणसित्तेर मिश्रे बंधाय
देवायुष्य चोथे आवता अविरते सित्तेर बंधाय
अप्रत्याख्यानीय कषाय जाता पांचमे छासठ प्रकृति बंधाय ९
मनुष्योने पंचेन्द्रि तिर्यंच चार गुणस्थाने बंध जाणो
जिन नामथी चोथे एकोतेर पांचमेथी कर्मस्तव जाणो
अपर्याप्ता तिर्यंच नरने एकसो नव प्रकृति बंधाय
जिन आदि अग्यार विना एमने एक गुणस्थानक थाय १०
नारकीनी जेम देवताने जाणो ओघे मिथ्यात्वे भिन्नता छे
एकेन्द्रिय त्रिक तेमां उमेरो ओघे एकसो चार थाय छे
भवनपति व्यंतर ज्योतिषी जिननाम रहित बंध छे
ओघे एकसो त्रण प्रकृति आ देवताओमां बंधाय छे ११
त्रीजाथी आठमां देवलोके एकसो एक प्रकृति ओघे छे
आनतादि नव ग्रैवेयके उद्योत चारे विना अट्ठाणुं छे

पांच अनुत्तरे चोथुं ज गुण बौतेर बंधमां होय छे
एकेन्द्रियादि सात मार्गणे ओघे एकसो नव होय छे १२
एकेन्द्रियने विकलेन्द्रिय पृथ्वी अप् वन. सात मार्गणा
सास्वादनना गुणस्थानके सूक्ष्म तेर विना छन्नु बंधमां
केटलाक आचार्यो बंधमां चोराणुं प्रकृतिओ माने छे
सास्वादने काळ छ आवलिका बे आयु विना प्रकृति माने छे १३
पंचेन्द्रिय त्रसकाय मार्गणा मनोयोगने वचनयोगमां
औदारिक काययोगमां ओघे एकसो वीस बंधमां
तेउ वाउना ओघे मिथ्यात्वे एकसो पांचनुं बंध थाय छे
तेउ वाउना जीवो मरीने फक्त तिर्यंचगतिमां जाय छे १४
औदारिक मिश्र काययोगे एकसो चौद प्रकृति बंधाय छे
आहारक छ जिन पांच विना मिथ्यात्वे एकसो नव थाय छे
नर तिरि आयु सूक्ष्मादि तेर विना सास्वादने चोराणुं छे
अनंतानु चोवीश चोथे सित्तेर तेरमे एक शाता बंध छे १५
चोथे जिन पांच मेळवता मनुष्य गति पंचक जाता
हवे कार्मण काययोगमां एकसो बार प्रकृति थाता
बाकी औदारिक मिश्र जेम कार्मण काययोग जाणजो

आहारक काय - मिश्र तेम कर्मस्तव प्रमाणे जाणजो १६
प्रकृति वैक्रिय काययोगमां एकसो चार बंध थाय छे
वैक्रिय मिश्र काययोगमां एकसो बेनो बंध थाय छे
त्रण वेदमां नव गुण छे एकसो बे प्रकृति छे
अनंतानुबंधि कषायमां ओघे मिथ्यात्वे एकसो सत्तर छे १७
अप्रत्या ने प्रत्याख्यानीयमां ओघे एकसो अढार होय छे
गुणस्थानको अनंते बे अप्रत्या चार प्रत्या पांच छे
संज्वलन त्रणेमां नव गुण लोभे दश अविरति चार
अज्ञान त्रिके बे के त्रण चक्षु अचक्षुए एकथी बार १८
यथाख्यात चारित्रे चार गुण अग्यारथी चौद ए जाणजो
तेर सुधी शाता वेदनीय चौदमां सबंधक जाणजो
सात मनःपर्वीने छ थी बार चार छेद विरतिए छ थी नव
बे परिहारविशुद्धिए गुणस्थानके बे छ ने सात १९
केवलज्ञान केवलदर्शने तेर चौद गुण बे होय छे
मति श्रुत अवधिने दर्शन चारथी बार नव जोय छे
उपशम समकिते आठ गुण चार क्षयोपशमे चारथी सात
दश क्षायिके चारथी चौद आहारके फक्त चौदनो घात २०-२१

उपशमे आयु बंध न थाय देव आयु न बंधाय पांच-छ
प्रथम त्रण लेश्याए ओघमां एकसो अढार-एकसो सतर २२
प्रथमे सास्वादनथी जाणो बीजा कर्मग्रंथ वखाणो
तेजो लेश्या एकसो अग्यार शुक्ललेश्या बंध एकसो चार जाणो २३
पद्म लेश्या एकसोने आठ एकथी सात गुण होय छे
भव्य तथा सन्नी मार्गणे चौद गुणस्थानको होय छे
अभव्यने एक असन्नीने बे अणहारी कार्मणा काये जाणो
दरेक मार्गणा गुणस्थानके ओघ मुजब बंधने जाणो २४
पहेली त्रण लेश्यामां चार तेजो पद्ममां सात गुण छे
शुक्लमां तेर गुणस्थानक छे एम देवेन्द्रसूरि कहे छे २५
तलासरीमां मल्लि पसाए एन. एन. सन्से अर्चना
अंचलगच्छमां सर्वोदयथी प्रथम थई छे रचना

इति बंधस्वामित्व कर्मग्रंथ पद्यानुवाद संपूर्ण

षडशीति कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद

रचयिता

पूज्य श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म.सा.

षडशीति कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद

नमुं वीरने गोयम गुरु जेवा गुणसूरिने वंदन करुं
देवेन्द्रसूरि रचित चतुर्थ गुर्जर पद्ये कर्मग्रन्थ रचुं
जीव मार्गणा गुण उपयोग योग बंध लेश्या अल्प बहु
भाव अने संख्यातादिक दश विचारोने हुं कहुं १

११ गाथा सुधी १४ जीवस्थानो - ८ विषयो

वळी जिनेश्वरोने नमीने चौद जीवस्थानकोने विषे
गुणस्थानको योग उपयोग चोथुं लेश्या तथा बंध विषे
उदय उदीरणाने सत्ता अमे आठ भेदे जणावशुं
चौद पंदर बार छ चार त्रण पांच त्रणने गणावीशुं २
चौद मूल मार्गणा स्थान विषे बासठ उत्तर स्थान विषे
जीवस्थान गुणस्थान तथा योग उपयोगने लेश्या विषे
अल्प बहुत्व छ द्वारने ओछा वधारे वर्णन कराय
तेथी जीवोने कर्म बांधतां चेतवणी एनाथी अपाय ३
चौद गुणस्थानकोने विषे जीव योग उपयोग लेश्या
आदि बार भावो विचाराशे चौद जीवस्थानक कहेवाय

सूक्ष्म बादर एकेन्द्रिय बि ति चउ पंचेन्द्रिय संज्ञी-असंज्ञी छे
पर्याप्ताने अपर्याप्ता कुल चौद भेद जीवना थाय छे ४-५
बादर एकेन्द्रिय विकक्षने असंज्ञि पंच अपर्याप्ता बे गुण
संज्ञि अपर्याप्ता पंचेन्द्रियने अविरत सहित छे त्रण गुण
संज्ञि पर्याप्ता जीवने वळी चौद गुणस्थानक होय छे
बाकी सात जीव भेदने वळी मिथ्यात्व गुणस्थानक होय छे ६
पहेला छ अपर्याप्ता जीवने कार्मण औदारिक मिश्र छे
संज्ञी अपर्याप्ता जीवने वैक्रिय मिश्र सह त्रण योग छे
कोईक आचार्यो सात अपर्याप्ते औदारिक कायने माने छे
शीलांकाचार्यादिना मतने बालावबोधमां जणावायुं छे ७
संज्ञी पर्याप्ते सर्व योगो होय सूक्ष्म पर्याप्ते मात्र एक योग
चार पर्याप्तमां बे योग जाणो बादर पर्याप्ता एकेन्द्रिये त्रण
औदारिक काययोगने जाणो वैक्रिय द्विक सहित होय छे
संज्ञी पर्याप्ता जीवोमां पिछाणो बार उपयोग होय छे ८
पर्याप्ता चउरिन्द्रि असंज्ञी पंचेन्द्रिमां चार उपयोग होय छे
दश जीव भेदमां उपयोगे त्रण उपयोग होय छे
संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्ते आठ उपयोग होय छे

उपयोग द्वार पूर्ण थयुं हवे लेश्या द्वार जणावाय छे ९
सन्नि द्विके छ लेश्या बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्ते चार छे
अग्यार जीवोमां लेश्या जुओ कृष्ण नील कापोत देखाय छे
एकथी तेर जीव भेदमां बंध उदीरणा सात-आठ कर्मनी छे
एकथी तेर जीव भेदमां जुओ उदय सत्ता आठ कर्मनी छे १०
संज्ञी पर्याप्ता जीवने बंध सात आठ छ एक होय छे
उदयस्थानोने सत्ता स्थानो सात आठ चार एम जोय छे
उदीरणा स्थान पांच जाणो सात आठ छ पांचने बे छे
चौद जीवस्थाने गुणस्थानादि अत्रे आठ द्वार पूर्ण थाय छे ११

१४ मूल मार्गणा - ६२ उत्तर मार्गणा - ६ द्वार

चार गतिने पांच इन्द्रिय छ कायने त्रण वेद - योग छे
चार कषाय आठ ज्ञान सात संयम दर्शन चार छे
छ लेश्या बे भव्य छ सम्यक्त्व संज्ञी आहारी बे बे जाणो
चौद मूल मार्गणाना भेद बासठ अन्य ग्रन्थथी जाणो १२-१६
संज्ञी पर्याप्ता अपर्याप्ता जीवो देवादि तेर मार्गणे होय छे
असन्नी लब्धि अपर्याप्ता त्रण मनुष्यगतिमां त्रण होय छे १७
बे बादर अपर्याप्ते सतेजो लेश्या पांच स्थावर एकेन्द्रिय जीव

चार असन्नी मार्गे बार भेद जाणो विकलेन्द्रिये जीव स्व बब्बे वार १८
त्रस कायमां दस जीवस्थानो बे इन्द्रियथी संज्ञी सुधी होय छे
अविरति अढार मार्गणामां सर्व जीवभेदो जणाय छे १९
केवलादि अग्यार मार्गणामां संज्ञी पंचेन्द्रिय एक होय छे
वचनयोगे पांच जीव भेद चक्षुदर्शने त्रण के छ होय छे २०
स्त्री पुरुष वेद पंचेन्द्रि मार्गे चार जीवस्थानक होय छे
अणहारी मार्गे आठ भेद सास्वादने सात होय छे २१
हवे गुणस्थानक कहेवाय छे तिर्यंच गतिमां पांच होय
देव नरके चार होय छे मनुष्यादि पांचे सर्व जोय
एकेन्द्रियने विकलेन्द्रिय पृथ्वी अप् वनस्पति बे बे होय
तेउकाय वायुकाय अभव्ये मिथ्यात्व गुणस्थानक जोय २२
त्रण वेद त्रण कषाये नव लोभे दस अविरतिए चार
अज्ञान त्रिके बे के त्रण चक्ष-अचक्षुए प्रथम बार २३
यथाख्याते छेल्ला चार जाणो मनःपर्यवे छ थी बार छे
सामायिक छेदमां चार जाणो परिहार विशुद्धिए बे छे
केवल द्विकमां छेल्ला बे जाणो मतिज्ञान श्रुतज्ञान कहे छे
अवधिज्ञान अने दर्शने नव गुणस्थानक होय छे २४

उपशम समकिते आठ जाणो क्षयोपशमे चार होय छे
क्षायिके अगियार वखाणो स्व प्रथम पांचे दशे छे
त्रण योग आहारी शुक्ल लेश्या तेर गुणस्थानक होय छे
चौदमां गुणठाणे अयोगी अणाहारी अलेशी होय छे २५
असंज्ञी मार्गे प्रथम बे जाणो पहेली त्रण लेश्याए छ होय छे
तेजो पद्मे प्रथम सात जाणो अणहारी मार्गे पांच होय छे २६
बांसठ मार्गणाए हवे योगनुं वर्णन कराय छे
सत्य असत्य मिश्र असत्यामृषा चार मन वचन योग छे
औदारिक वैक्रिय आहारक त्रण मिश्र कार्मण पंदर छे
अणाहारी मार्गणामां एक कार्मण काययोग होय छे २७
मनुष्यादि छव्वीसे पंदर योग तिर्यंचादि दसे तेर योग छे २८
देव नरके अग्यार योग कर्मग्रन्थमां एनो विस्तार छे २९
स्थावरमां कार्मण योग अने औदारिक द्विक योग होय छे
एकेन्द्रिय अने वायुकायमां वैक्रिय द्विक सह पांच होय छे
असंज्ञि मार्गे छ योग होय विकलेन्द्रिये चार होय छे ३०
मनादि छ मार्गे तेर योग केवलज्ञान दर्शने सात छे ३१
परिहार विशुद्धि सूक्ष्म संपराये कुल नव योग होय छे

यथाख्यात देशे अगियार मिश्र मार्गे दश होय छे ३२
आठ ज्ञान चार दर्शन कुल बार उपयोग कहेवाय छे
देव तिरि नरक अविरति नव उपयोग जणावाय छे ३३
त्रस आदि तेर मार्गणाए बार उपयोग होय छे
चक्षु आदि अग्यार मार्गणाए दश उपयोग होय छे ३४
चउरिन्द्रि असंज्ञीए चार इग बि ति पांच स्थावरे त्रण
अज्ञान अभव्य मिथ्यात्व द्विके पांच उपयोग जणावाया छे ३५
केवल ज्ञान दर्शने उपयोग बे पोताना ज जणाय छे
क्षायिक यथाख्याते नव देशविरते छ जणाय छे
मिश्र समकित मार्गणाए नव उपयोग जणाय छे ३६
अणहारी मार्गणाए दस ज्ञानादि अग्यारे सात होय छे ३७
अन्य आचार्योना मत कहे छे मन वचन काय योगमां
बे तेर तेर बार जाणो आठ बे चार चारमां
चार बे पांच त्रण जाणो जीव गुण योग उपयोगमां ३८
बासठ मार्गणा द्वारमां हवे लेश्या द्वार जे कहेवायना ३९
कृष्णादि छ मार्गणामां जाणो पोतपोतानी एक लेश्या छे
एके असंज्ञि पृथ्वी अप वणे एकथी चार लेश्या होय छे

नरक विकल अग्नि वायुने प्रथम त्रण लेश्या होय छे
यथाख्यातादि चारे शुक्ल लेश्या एकतालीशे छ लेश्या होय छे
सौथी थोडा मनुष्यो नरक देव असंख्यात गुणा गणावाया छे
तिर्यंचोने अनंता जाणो गति मार्गणा अल्पबहुत्व छे ४०
पंचेन्द्रियथी अधिक चउरीन्द्रि तेइन्द्रि बेइंद्रिय विशेष छे
एकेन्द्रिय वण अनन्ता छे त्रस अग्नि पृथ्वी अप वायु छे ४१
अल्प मनोयोगी जीवो छे वचन योगी असंख्य गुणा
काय योगी अनंत गुणा पूर्ण थई आ योग मार्गणा
पुरुषो थोडा स्त्रीओ संख्यात गुणी अनंत गुणा नपुंसको छे ४२
मानी क्रोधी मायावी लोभी एक एकथी अधिक छे
थोडा मनःपर्वी अवधि असंख्य मति श्रुत विशेषाधिक छे
तेनाथी विभंगज्ञानी जीवो असंख्यात गुणा होय छे ४३
केवलज्ञानी छे अनंतगुणा मति श्रुत अज्ञानी अनंतगुणा
थोडा सूक्ष्म परिहार विशुद्धि यथाख्यात संख्यात संख्यातगुणा ४४
छेदोपस्थापनीने सामायिक चारित्रवाळा संख्यात गुणा
देशविरति असंख्यात गुणा अविरति छे अनंत गुणा
थोडा अवधि दर्शन जाणो चक्षु केवल असंख्य अनंत

अचक्षु दर्शन अनंतगुणा दर्शन द्वारनो थाय अंत ४५
पश्चानुपूर्वीए लेश्या जाणो थोडा असंख्यात अनंत विशेष
अभव्य थोडा भव्यो अनंतगुणा सास्वादनवाळा थोडा अशेष ४६
उपशमे संख्यात गुणा छे मिश्र संख्यात गुणा होय छे
क्षयोपशमे असंख्यातगुणा क्षायिकने मिथ्यात्वी अनंत छे
हवे चारगतिमां मार्गणाओ बासठ संक्षिप्त कहेवाय छे
नरक पांत्रीश तिरि एकावन नर पचास ओगणचालीस देव छे
संज्ञी थोडा असंज्ञी अनंता अणहारीथी आहारी असंख्यगुणा
बासठ मार्गणाओए छ द्वारो थाय छे अहीं पूर्ण ४७

चौद गुणस्थानके १० द्वार

हवे चौद गुणस्थान उपर दस द्वारोने कहेवाय छे
मिथ्यात्वे चौद सास्वादने सात अविरते बे सर्व गुणे एक छे ४८
एक बे चोथा गुणस्थानके आहार द्विक विना तेर योग छे
अपूर्वकरणादि पांच स्थाने चार चार एक योग होय छे
मिश्र मार्गे दश योग जाणो देशविरतिए अग्यार छे ४९
प्रमत्ते तेर अप्रमत्ते अग्यार सयोगीए सात न अयोगीए छे ५०
उपयोग पांच प्रथम बे मां त्रण चार पांचे छ जणाय

प्रमत्तादि सात गुणे सात जाणो अन्तिम बे केवल द्विक गणाय ५१
बीजा सास्वादन गुणस्थानके त्रण बाबतो जणावाई छे
सिद्धान्तकारने मान्य होता कर्मग्रन्थमां न स्वीकाराई छे ५२
एकथी छ गुणे सर्व लेश्या सातमे त्रण छ ए शुक्ल छे
मिथ्यात्व अविरति कषाय चोथो योग बंधना हेतु छे ५३
मिथ्यात्व पांच प्रकारे जाणो अविरति बार प्रकारे छे ५४
पच्चीस कषायो पंदर योगो सत्तावन उत्तर बंध हेतु छे
प्रथम गुणठाणे चार बंध छे चार गुणठाणे त्रण बंध छे
पांच गुणठाणे बे बंध छे त्रण गुणठाणे योगबंध छे ५५
चार बंध हेतु वाळी शाता जाणो त्रण बंधवाळी पांसठ छे
बे वाळी पांत्रीश प्रकृतिओ फक्त मिथ्यात्ववाळी सोळ छे
विस्तार गाथानो कर्मग्रन्थे जाणो चौद गुणस्थानक हवे जणाव
उत्तर बंध हेतुना क्रम जाणो एकथी तेर गुण संख्या प्रमाणे ५६
पंचावन पचास तेंतालीश छेंतालीश ओगणचालीश छवीस
चोवीस बावीस सोळने दश नव नव सात बंध हेतु तेर ५७
अयोगीये बंध न होय चार गाथामां विस्तार जोय
बंध उदय उदीरणा सत्ता चौद गुणस्थानके क्यां होय ५८-६१

अप्रमत्ते सात आठ बंधाय त्रण आठ नवे सात बंधाय
दशमे छ त्रणे एक ज बांधे अयोगी अबंधक जणाय ६२
दश सुधी उदय सत्ता आठ क्षीणमोहे मोह विना सात
तेर चौदे कर्मो गणाया चार अग्यारे सत्ता आठ उदये सात ६३
त्रीजा विना छ गुणठाणे जाणो कर्म सात आठ उदीरणा छे
मिश्रे आठ अप्रमत्ते छ जाणो सूक्ष्मे छ पांच उदीरणा छे ६४
उपशान्ते पांच क्षीणे पांच बे सयोगीए बेनी उदीरणा छे
उपशान्ते थोडा क्षीणे संख्याता सूक्ष्म अनि अपूर्वे अधिक छे ६५
सयोगी अप्रमत्त प्रमत्ते जाणो मुनि संख्यात गुणा गणाय छे
देश सास्वा मिश्रे अविरते असंख्यात गुणा गणाय छे ६६
अयोगी मिथ्यात्वी अनंतगुणा उप-खय-मिश्र उदय-परि छे
बे नव अढार एकवीस त्रण प्रथम भावे समं चरणं छे ६७
क्षायिक भावे चारित्र सम्यक् केवल द्विकने दानादि पांच
त्रीजे भावे दश उपयोग सम्यक् विरति द्विकने लब्धि पांच ६८
चोथे छ लेश्या चार गति कषाय त्रण वेदने अज्ञानादि चार
पारिणामिक भावे जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व थया त्रण ६९
सित्तेरथी त्र्हुंतेर गाथाने मूळ कर्मग्रन्थे जाणी लेवी ७०-७३

हवे कहे संख्यात असंख्यात अनंत स्वरूप अंतिम जेवी
संख्यातु एक असंख्यातु त्रण अनंतु पण त्रण प्रकारे छे
सर्व भेदो जघन्य मध्यम उत्कृष्टे पण त्रण प्रकारे छे ७४
बेनी संख्या जघन्य संख्यातु वच्चेनी संख्या मध्यम गणे छे
चार प्यालाना चार नाम जाणो अनवस्थित बीजो शलाका छे
प्रति शलाका महाशलाका जंबूद्वीप मापे शिला साथे छे
एक हजार उंडाईवाला ए च्यार प्यालाने जणावाय छे ७५-७६
सरसवना दाणाथी भरीने द्वीप समुद्रे एक नाखता जाय
खाली थाय फरी प्याला भराय, उत्कृष्ट संख्यातु तेम अनंतु थाय
परित्त युक्त निजपद युक्त जे मूल कर्मग्रन्थे समजाय
देवेन्द्रसूरिनी कमाल रचना सर्वोदय संक्षिप्ते समजाय ७७-८९

कळश

अचलगच्छीय आर्य कल्याण गौतम नीति गुणसूरि
तलासरीमां मल्लि कृपाए बे हजार बासठ खरी
वीरचंद नरसी सोनी परिवार ए छे मनगमता
सर्वोदये संक्षिप्त रचना कर्मग्रन्थो चार झगमगता

इति षडशीति कर्मग्रंथ पद्यानुवाद संपूर्ण

शतक कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद

रचयिता

पूज्य श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म.सा.

शतक कर्मग्रंथनो पद्यानुवाद

मंगलाचरण

नमुं वीरने गोयम गुरु जेवा गुणसूरिने वंदन करुं
देवेन्द्रसूरि रचित पंचम गुर्जर पद्ये कर्मग्रन्थ रचुं
शतकमां ध्रुव बंध उदय सत्ता घाती पुन्य परावर्त छे
विपाक बंध स्वामि श्रेणीने छव्वीस द्वारे कहेवाय छे १

ध्रुवबंधी

जे कर्म प्रकृति अवश्य बंधाय तेने ध्रुवबंधी कहेवाय छे
मिथ्यात्वादि बार कषाय सोल चौद आवरण पांच अंतराय छे
सुडतालीश कर्म प्रकृतिओ ग्रन्थमां ध्रुवबंधी जणावी छे
त्रउंतेर कर्मप्रकृतिओने अध्रुवबंधी ग्रन्थे गणावी छे २-४
तेना बंध चार भांगा जुओ अनादि सादिने अनन्त सान्त
जे बंधनी आदि ज न होय ते अनादि बंध कहेवाय छे
आदि बंधवाळो सादि बंध अंत ज न आवे ते अनंतबंध
जे सदा न चाले अंत आवे तेने सान्त बंध कहेवाय छे ४

ध्रुवबंध आदि भांगा

छव्वीस ध्रुवोदयी प्रकृतिमां पहेलो बीजो भांगो होय छे
सुडतालीस ध्रुवबंधीमां त्रीजा विना त्रण भांगा होय छे
मिथ्यात्व मोहे उदय आश्रीने एमां पण त्रण भांगा होय छे
अध्रुवबंधी अध्रुवोदयीमां तुरिय भांगो गणावायो छे ५
सत्यावीश प्रकृतिओ जाणो जे नित्योदयी ध्रुवोदयी छे
पंचाणुं अध्रुवोदयी जाणजो एकसोत्रीस ध्रुवसत्ता छे
अठ्यावीस अध्रुवसत्ता जाणो सहु नामो शतकथी जाण लीओ
मिथ्यात्व मोहनीयमां त्रण गुणे
विकल्पे अविरत आठ गुणे लीओ ६-९

गुणठाणे ध्रुवसत्ता

सम्यक्त्व मोहनीयमां बीजे सत्ता विकल्पे सत्ता दशगुणे छे
मिश्र मोहनीयमां बीजे त्रीजे विकल्पे सत्ता नव गुणे छे
अनंतानुबंधि पहेले बीजे विकल्पे मिश्र नवगुणे छे
विस्तार एनो जाणवा माटे शतक नाम अभ्यास कराय छे १०-११
आहारक सप्तक सर्व गुण विकल्पे सत्तामां होय छे
बीजा त्रीजा विना सर्व गुणे विकल्पे जिन सत्तामां होय छे

आहारक सत्तक जिन नामथी जीव मिथ्यादृष्टि क्यारे न थाय
बन्नेमांथी एक ज होय तो जीव मिथ्यादृष्टि थई जाय छे १२

घाती प्रकृति

हवे घाती अघाती प्रकृति जाणो वीश प्रकृति सर्व घाती छे
पच्चीश प्रकृतिओ देश घाती पंचोतेर अघाती प्रकृति छे
बेंतालीश प्रकृतिओ पुन्यनी पापनी ब्याशी प्रकृतिओ छे
ओगणत्रीश अपरावर्तमान एकाणु प्रकृति परावर्त छे १३-१९
हवे क्षेत्र भव जीव विपाकी पुद्‌गल विपाकी कहेवाय छे
आनुपूर्वी चार क्षेत्र चार आयुष्य भव विपाकी छे २०

पुद्‌गलविपाकी - ४ बंध

अट्‌ठोतेर जीव विपाकी छे छत्रीश पुद्‌गल विपाकी छे
प्रकृति स्थिति रस प्रदेश बंधना चार प्रकार छे २१
मूल आठ कर्मे बंध जुओ आठ सात छ एक बंधाय
त्रण भूयस्कार त्रण अल्पतर चार अवस्थित अवक्तव्य न जणाय
वधारे प्रकृति बंधाय तेने भूयस्कार बंध कहेवाय छे
न्यून बंधाय ते अल्पतर वध घट न थाय अवस्थित छे

अबंधक थई फरी शरु करे
पहेलो समय अवक्तव्य बंध जणाय २२-२३

भूयस्कार

चोवीशमी गाथा मूले जाणो जे दर्शन मोहना बंध कहे
नाम कर्मे आठ बंध जाणो बाकी कर्मे बंध एक एक लहे
नाम कर्मे भूयस्कारादि जाणो जे छ सात आठ त्रण गणाय
विस्तार एनो मूळथी जाणो हवे अढारमुं द्वार जणाय २४-२५

कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति

वीश कोडाकोडी नाम गोत्रे छे मोहनीये सित्तेर कोडाकोडी
नरक देवायु तेत्रीस सागर छे चारे सागर त्रीश कोडाकोडी २६

कर्मनी जघन्य स्थिति

नाम गोत्रे आठ आठ मुहुर्त वेदनीये बार मुहुर्त छे
पांच कर्ममां अन्तर्मुहुर्त ए जघन्य स्थिति जणावी छे २७

उत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध

पांच ज्ञानावरणी नव दर्शन अशाता वेद पांच अंतराय
वीश प्रकृति त्रीश कोडाकोडी अढार सूक्ष्म त्रिक विकल जणाय
प्रथम संघयण संस्थाने दश पांचमां बे बे वधारवानुं छे

सर्वेनी उत्कृष्ट स्थिति जाणो कोडाकोड सागरोपमनी छे २८
सोळ कषाय चालीश कोडाकोडी मृदु लघु स्निग्ध उष्ण सुरभि
श्वेत मधुर दश कोडाकोडी चारमां अढी अढी वधारवी २९
शुभादि तेर दश कोडाकोडी पंदर कोडाकोडी मनुष्यादि चार
मिथ्यात्वेके सित्तेर कोडाकोडी कर्म बांधता हे जीव विचार ३०
भयादि बेंतालीश वीश कोडाकोडी
सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति छे
तीर्थंकर आहारक द्विकनो अंतः कोडाकोडी सागर छे
अबाधा काळ अंतर्मुहुर्त जाणो जघन्य स्थिति संख्यातगुण न्यून छ
मनुष्य तिर्यंच आयुष्यनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण पल्य छे ३१-३३
एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय जीवो पूर्व क्रोड वर्ष आयु बांधे छे
असंज्ञी जीवो चारे आयुष्यो पल्यनो असंख्यात बांधे छे
निरुपक्रमी जीवोने छ मास शेष जीवोने भवनो त्रीजो भाग
आयुष्य कर्मनी अबाधा छे हवे उत्तर प्रकृति कहे छे ३४

उत्तर प्रकृतिनो जघन्य स्थिति बंध

पांच ज्ञान चार दर्शनने पांच अंतरायने छेल्लो लोभ
जघन्य स्थिति अंतर्मुहुर्त छे यश उच्च आठ मुहुर्त जोय

सात वेदनीय बार मुहुर्त पुरुष वेद आठ वर्ष जाणो
छेल्लो कषाय बे एक अर्धमास
पंच्याशी प्रकृति शतके जाणो ३५-३८
एकसो वीस कर्म प्रकृतिनो जघन्य अबाधा अंतर्मुहुर्त छे
आयुष्य कर्म उत्कृष्ट स्थितिमां अबाधा काळ अंतर्मुहुर्त छे
कोईक आचार्यो जिन नामने जघन्ये दश हजार कहे छे
आहारक द्विकने जघन्ये अंतर्मुहुर्त प्रमाण माने छे ३९

क्षुल्लक भव स्वरूप

एक श्वासोश्वासे साधिक सत्तर क्षुल्लक भवो एवा थाय छे
एक मुहुर्ते साडत्रीश त्रहुंतेर श्वासोश्वास घणाथी लेवाय छे
एक मुहुर्ते पांसठ हजार पांचसो छत्रीस क्षुल्लक थाय
बसो छप्पन्न आवलिकाए एक क्षुल्लक भव गणाय ४०-४१

उत्कृष्ट स्थितिबंधना स्वामी

उत्कृष्ट स्थिति अविरते बांधे ए तीर्थंकर नामकर्मने
प्रमत्त मुनि आहारक द्विकने तथा देवायुष्यने बांधे
मिथ्यादृष्टि बाकीनी प्रकृतिओ उत्कृष्ट स्थितिए बांधे छे
विकलादि पंदर प्रकृतिने तिर्यंच मनुष्यो बांधे छे ४२-४३

एकेन्द्रिय जाति स्थावर आतप ईशान सुधीना देवो बांधे छे
चुम्मालीशथी एकावन गाथा शतकमांथी याद कराय छे   ४४-५१

कर्मस्थितिनुं शुभाशुभपणुं

संक्लिष्टताथी बंधाता कर्मोनी उत्कृष्ट स्थिति अशुभ छे
त्रण आयु छोडी विशुद्ध कर्मोनी जघन्य स्थिति कही शुभ छे

योगनुं अल्पबहुत्व

योगनुं अल्पबहुत्वने जाणो त्रेपन्नथी पंचावन गाथामां
अबन्ध काल एकतालीशमां छे नथी ओगणएंशी प्रकृतिमां   ५३-५७

बंध काळ

बंध स्थिति रस जघन्य उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट सादि अनादि भांगा
पंचोतेर गाथा सुधी जाणी लीओ
शतक ग्रन्थमां विस्तार भांगा ५८-७५

प्रदेश बंधे सात वर्गणाओ ग्रहण अग्रहण प्रायोग्य
वैक्रिय आहारक तैजस भाषा श्वासोश्वास मन कार्मण भोग्य
सूक्ष्म सूक्ष्म छे न्यून न्यून छे अंगुल असंख्यात अवगाहना
मूळ उत्तर शतकथी जाणो
एक्याशी सुधीनी तमे गाथामां ७६-८१

गुणश्रेणी स्वरूप

अग्यार गुणश्रेणीने जाणो सम्यक्त्व देश सर्व विरति छे
अनंतानुबंधीनी विसंयोजना चारित्र दर्शन मोह क्षपणा छे
चारित्र मोहनी उपशमना उपशान्त क्षीणमोह नवमुं रे
सयोगी अयोगी थई गुणश्रेणी हवे तेनुं विवेचन करशुं रे ८२-८३

गुणस्थान प्राप्तिनुं अंतर

उदय समयथी असंख्यात गुणाकारे दलिक जे रचे छे
तेने गुणश्रेणी कहेवाय छे असंख्यात गुणा कर्मो निर्जरे छे
सास्वादने अन्य गुणे जघन्ये अंतर्मुहुर्तने पल्य असंख्यात
उत्कृष्ट विरह काळे मिथ्यात्वे एकसो बत्रीस सागर विख्यात ८४

पल्योपमनुं स्वरूप

उत्कृष्ट विरह बाकी गुणे अर्ध पुद्गल परावर्त काळ
पल्योपमने सागरोपम शुं हवे जणावे भेदने काळ
उद्धार अद्धा क्षेत्र त्रण भेदो समये समये सो सो वर्षे
द्वीप समुद्र आयु त्रसादि एमां जीवोनुं माप नीकळशे ८५

पुद्गल परावर्तनुं स्वरूप

द्रव्य क्षेत्र काळ भाव भेदे सूक्ष्म बादर बे बे प्रकारे
आठ पुद्गल परावर्त छे एक पुद्गल परावर्तमांहे

अनंती उत्सर्पिणी आवे छे अनंती अवसर्पिणी आवे छे
बे गाथामां एनो विस्तार शतक ग्रन्थथी जणाय छे ८६-८८

उत्कृष्ट जघन्य प्रदेश बंधक

उत्कृष्ट प्रदेश बंध अने जघन्य प्रदेश बंध कहे छे
चार प्रकारे अनुत्कृष्ट प्रदेश चोराणु गाथा सुधी कहे छे
बे गाथामां योग स्थानादि कही चौद राज घन सात थाय छे
पंक्तिवाळी सुची श्रेणी छे वर्ग ते प्रवर कहेवाय छे ८९-९७

उपशम श्रेणीनुं स्वरूप

अनंतानुबंधी अठ्यावीशने जीव ज्यारे एने उपशमावे
अश्व कर्ण करणाद्धा किट्टि करणाद्धा किट्टि वेदनाद्धा थावे
भवक्षय प्रतिपात कोईने अद्धा क्षय प्रतिपात थाय
विस्तार शतकमां जाणीने क्षपक श्रेणीने हवे कहेवाय ९८

क्षपक श्रेणीनुं स्वरूप

क्षपक श्रेणीमां अनंतानुबंधी सोळ प्रकृतिनो क्षय करे
आठ कषाय आदि साडत्रीश प्रकृतिनो जीव क्षय करे ९९
जीव केवली बने छे एम देवेन्द्रसूरिजी जणावे छे
आत्म स्मरणार्थे आ शतक में रच्युं छे एम जणावे छे १००

कळश

संक्षेपमां ने सरल भाषामां शतक रच्युं तलासरीमां
विस्तार एनो जाणी लीओ पंचसंग्रहने कम्मपयडीमां
मल्लि जिन गुणसूरि कृपाथी गुणवल्लभनी प्रेरणाथी
एन. एन. सन्से रचना करी सर्वोदयसागरे उमंगथी

इति शतक कर्मग्रंथ पद्यानुवाद संपूर्ण

सप्ततिका कर्मग्रंथ - पद्यानुवाद

रचयिता

पूज्य श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म.सा.

सप्ततिका कर्मग्रंथनो पद्यानुवाद

मंगलाचरण

नमुं सिद्धने गोयम गुरु जेवा गुणसूरिजीने नमन करुं
चन्द्रमहत्तराचार्य रचित छट्ठा कर्मग्रन्थने पद्ये रचुं
दृष्टिवादना पांच भेदमां चोथुं पूर्वगतनुं द्वार छे
आग्रायणी पूर्वना पाचमां वीश प्राभृतो आवेला छे १
चोथुं प्राभृत कर्मप्रकृतिनुं तेमां चोवीश अनुयोग छे
त्रीजुं अनुयोग बंध उदय सत्तारूप संवेध आवेलुं छे
जीव केटली प्रकृति बांधे छे जीव केटली प्रकृति वेदे छे
बांधता वेदता सत्ता स्थानो मूळ उत्तर विकल्पे जाणी लो २

बंधोदय सत्ता संवेध

आठ सात छ बंधक विषे उदय सत्ताए आठ कर्म होय छे
एक बंध विषे त्रण विकल्पो अबंधे एक विकल्प होय छे
प्रथम तेर भेदे बे संवेध संज्ञी पर्याप्ते पांच संवेध
केवलज्ञानीने छेल्ला बे भांगा चार गाथानुं थयुं अवेध ३-४

गुणस्थान - भांगा

आठ गुणे एक एक भांगो छ गुणे संवेध बे बे छे
बंध उदय सत्ता जाणो कोईक कहे विकल्पे होय छे
आठ कर्मनी प्रसिद्ध प्रकृति नामनी बेंतालीश जाणो
ज्ञान अंतराये बंध उदये सत्ताए पांच प्रकृति माणो ५-७

दर्शनावरण संवेध भांगा

बंध अभावे पांच प्रकृतिओ उदय सत्तामां होय छे
दर्शने बंध सत्ताना स्थानो त्रण त्रण उदय चार पांच छे
नव दश गाथा मूळे जाणो गोत्रना सात भांगा होय छे
वेदनीये आठ चारे आयुष्ये पांच नव नव पांच होय छे ८-११

मोहनीय बंध

मोहनीय कर्मना दस बंधो नव उदयने पंदर सत्ता
विस्तार एनो मूळथी जाणो दस बंधे एकवीस भांगा १२-१६
नव उदये चालीस चोवीशी पद चोवीशी बसो अठ्यासी छे
विकल्पे एकतालीश बस्सो नेवुं अनुक्रमे ते गणावाई छे
उदय भांगा नवसो त्यासी छे विकल्पे नवसो पंचाणुं छे
छ हजार नवसो सुडतालीश पदो विकल्पे एकोतेर छे १७-२२

बंधस्थाने सत्ता

बावीश बंधे त्रण सत्ता स्थान एकवीशे सत्ता एक जाणो
सत्तर बंधे छ सत्ता स्थान तेर नव बंधे पांच पांच जाणो
पांच चार बंधे छ छ सत्ता त्रण बे एके सत्ता पांच जाणो
बंध विच्छेदे छे चार सत्ता हवे नामकर्मने विषे जाणो २३-२५

नामकर्म बंध

नाम कर्मे आठ बंध स्थान त्रेवीश बंधे चार भांगा छे
पच्चीश बंधे पच्चीश भांगा छव्वीश बंधे सोळ भांगा छे
अट्ठावीशे नव ओगणत्रीशे नवहजार बस्सो अडतालीस
एकत्रीशे एक त्रीसबंधे चार हजार छस्सो एकतालीश २६-२७
एक बंधे एक भांगो कुल तेरहजार नवसो पिस्तालीश
नाम कर्मे उदयस्थान जाणो वीशे एक ने बे छे एकवीश
चोवीशथी एकत्रीशे जाणो क्रम त्रणथी दसने जाणो
नवे अग्यार आठे छे बार ओगणत्रीश गाथा भांगा जाणो २८-३०

नामकर्म सत्ता

बार उदये सात हजारने सातसो एकाणुं भांगा छे
नाम कर्मना सत्ता स्थान बार एकत्रीश गाथाए जणाव्या छे

बत्रीशमीए नामे बंध आठ उदय बारने सत्ता बार छे
ज्यां जेटला घटे तेटला घटाडी
विकल्पो करवा जणाव्युं छे ३१-३२

सामान्यथी बंध - उदय - सत्ता संवेध

सामान्यथी बंध उदयने कहेवाय छे संवेध सत्ता
त्रेवीश पच्चीश छव्वीश बंधे नव नव उदय पांच पांच सत्ता
अठ्यावीशना बंध स्थानके आठ उदयने चार सत्ता छे
ओगणत्रीशने त्रीश बंधे नव उदयने सात सत्ता छे ३३
एकत्रीशना बंध स्थानके एक उदयने एक सत्ता छे
हवे एकना बंध स्थानके एक उदयने आठ सत्ता छे
बंधना अभावे उदयने सत्ताना स्थानो दस दस छे
त्रणेना प्रकृति जीव गुण भांगा विकल्पे घटाड्या छे ३४-३५

जीवस्थान

तेर जीवे ज्ञान अंतराय एक छे एक जीवे बन्ने संवेध भांगा छे
द्रव्य मने विकल्पनो अभाव छे तेर जीवे दर्शने नव बंध छे
चार अने पांच उदय जाणो नवनी सत्ता बे भांगे होय छे
एक जीवे अग्यार भांगा गोत्र वेदनीय भांगा कहेवाय छे३६-३७

पर्याप्त संज्ञी वेदनीए भांगा आठ छे तेर जीवे चार छे
गोत्रे सात छे तेर जीवे त्रण हवे आयु भांगा कहेवाय छे
पर्याप्त संज्ञी अठ्यावीस छे अपर्याप्त संज्ञी भांगा दस छे
पर्याप्त असंज्ञी नव भांगा छे अग्यार जीवे भांगा पांच छे ३८-३९
आठ पांच एक जीव स्थाने बंधमांहे एक बे दस छे
उदय त्रण चार नव छे सत्ता त्रण त्रण पंदर छे
नामकर्म भांगा बे गाथा जाणो चौद गुणे आठ कर्म कहे छे
ज्ञान अंतराय बंध उदये सत्ता दस गुणस्थाने कहे छे ४०-४२

गुणस्थाने भांगा

अग्यार बारे उदय सत्ता छे दर्शने नव बंध प्रथम बीजे
उदय पांच के चारने जाणो नवनी सत्ता जणाय कीजे
त्रीजेथी आठमा पहेला भागे बंध छ उदय चार के पांच
नवनी सत्ता आठथी दस गुणे
बंध चार उदय सत्ता ए ज छे ४३-४४
क्षपक आश्रयी नव दश गुणे चार बंध उदय छ सत्ता छे
पिस्तालीशथी सुडतालीश जाणो वेदनीय गोत्र आयुनी छे
मोहे एकथी आठ बंध एक छे अनिवृत्ते पांच बाकी अभाव छे

आठ गाथाओ मूळे जाणजो जेमां उदय भांगा जणाव्या छे ४५-५६
सत्तावनमी गाथा सत्तानी जाणो मोहनीय कर्मनी कहे छे
पहेले त्रीजे आठ अग्यारे त्रण चारथी साते पांच सत्ता छे
बीजे एक बादरे अग्यार छे सत्ता सूक्ष्मे चार जणावी छे
गुणस्थाने नाम कर्म जाणो बंधादि बे गाथाए जणावी छे ५७-५९

मिथ्यात्वे बंध

मिथ्यात्वे गुणे त्रेवीसथी त्रीसे छ बंधे छ भांगा मूळे जाणो
बीजा गुणे बंध अठ्यावीसथी त्रीस भांगा त्रण छन्नुसे आठ जाणो
मिथ्यात्व उदये नव गुणे भांगा सात हजार सातसो त्रहुतेर जाणो
बीजा गुणे उदय स्थानो सात
चार हजार सत्ताणुं भांगा जाणो ६०-६३

चार गति

चार गतिए बंध उदयने सत्ता चार चार कया मूळे जाणो
जाति मार्गणाए बंधादि स्थानो त्रण त्रण त्रण कया मूळे जाणो
छासठमी गाथा मूळे जाणो हवे उदय उदीरणा कहे छे
एकतालीस प्रकृतिए फ़ेर छे एक्यासी प्रकृति एक ज छे ६४-६७
ज्ञान अंतराय दस जाणो दर्शन नव बे वेदनीय

नाम नव आयु चार त्रण वेद सम्यक्त्व मिथ्यात्व मोहनीय
संज्वलन लोभ उच्च गोत्र एकतालीश ए सम न होय
बाकी एक्यासी प्रकृतिओने उदयने उदीरणा सम होय ६८

गुणस्थाने बंध

गुणस्थाने बंध प्रकृति कहे छे मिथ्यात्वे एकसो सत्तर बांधे
बीजे एकसो एक कहे छे मिश्र गुणे चुमोत्तेर बांधे
चोथे गुणे सत्तोत्तेर कहे छे पांचमे गुणे सडसठ बांधे
त्रेसठ प्रकृति छट्ठे कहे छे
सातमे गुणे ओगणसाठ बांधे ६९-७०

एकोत्तर गाथा मूळथी जाणो पांच अनिवृत्ते बावीस अढार
सूक्ष्म संपराये सत्तर जाणो त्रण गुणे ए साता बंधाय
अयोगी अबंधक होय छे बीजा त्रीजा कर्मग्रन्थे जणाय
चुम्मोतेर गाथा मूळथी जाणो
मनुष्ये सर्व प्रकृति सत्ता जणाय ७१-७४

उपशम श्रेणी

कषाय चतुष्क दर्शन मोह त्रिक चोथाथी अपूर्वे उपशांत छे
अनिवृत्ते विविध अग्यार मूळे प्रकृतिओ उपशांत छे

सूक्ष्म संपराये मोहकर्म सत्यावीश प्रकृति उपशांत छे
वीतराग गुणस्थाने जाणो अठ्यावीश प्रकृति उपशांत छे ७५-७७

क्षपक श्रेणी स्वरूप

क्षपक श्रेणी हवे कहेवाय सात प्रकृति चोथेथी साते क्षय छे
अनिवृते तेर क्षय करी सोळ प्रकृतिनो करे क्षय छे
पुरुष वेदथी सूक्ष्म लोभ हणे क्षीण मोहे सोळ क्षय मूळे जाणो
नव गाथाने मूळथी जाणो चन्द्रमहत्तराचार्यने वखाणो ७८-९१

कळश

एम छट्ठो कर्मग्रन्थ पद्ये रच्यो प्रभु कृपाने मल्लिनाथजी रे
दृष्टिवादमांथी एने उद्धर्यो श्री चन्द्रमहत्तराचार्यजी रे
आर्य कल्याण गौतम गुणसूरि गुरुकृपाए सर्वोदयजी रे
एन. एन. सन्से तलासरीमां चौदमी रचना करीजी रे
अनंतनाथ भक्त वीरचंदजीने ए क्रम गमतो सोनीजी रे
करी भक्ति उत्कृष्ट चार मासमां आनंद अने उमंगथी रे

इति सप्ततिका कर्मग्रंथ पद्यानुवाद संपूर्ण

विनंती

चार प्रकरण - त्रण भाष्य अने छ कर्मग्रंथना मूळ साथे दरेक प्रकरणोना पद्यानुवादो पुस्तिका रुपे स्वतंत्र पण छपाया छे. ते दरेकनी किंमत रु. २५-०० राखेल छे.

जिज्ञासुओने आ पुस्तिकाओ मूल्य साथे पोस्टेज खर्च मोकलवाथी नीचेना सरनामेथी मळी शकशे.

सम्पर्क

मनोज जैन

C/o. महावीर जैन आराधना केन्द्र

कोबा, गांधीनगर - 382007.

मोबाईल : 94270 51632

नोंधपोथी

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टना प्रकाशनो

- ➔ 500 पूजनप्रतो
- ➔ 135 6 भाषाना कथाग्रन्थो (अप्राप्य)
- ➔ 350 अप्रगट ग्रन्थो हस्तप्रतोमांथी लखाई गया छे
- ➔ 45 आगमग्रन्थो (अप्राप्य)
- ➔ 120 सामयिकमां स्वाध्याय काव्यकृतिओ (क्रमसर छपाय छे)
- ➔ 25 अचलगच्छेश पू. आ. कल्याणसागरसूरि तथा पू. आ. विद्यासागरसूरि रचित स्तोत्र आधारे खंडान्वय-दंडान्वय
- ➔ 75 पू. अचलगच्छेश तथा आचार्य भ., साधु भगवंतना संस्कृतमां जीवनचरित्रो

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्ट तरफथी २५०० ग्रन्थो प्रकाशित करवानी भावना छे. हाल १२५० ग्रन्थोनी झलक आपी छे. लेखक 'श्री पार्श्व' नुं साहित्य क्रमसर प्रकाशित करवानी भावना छे.

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

Printed by. Navprabhat 98255 98855

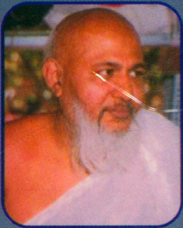

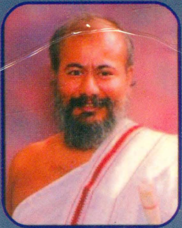

અચલગચ્છાધિપતિ પ.પૂ.આ.ભ. શ્રી ગુણસાગરસૂરીશ્વરજી મ.સા.નો સર્વોદયજીનો પરિવાર